Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 35 • 03 जून - 09 जून , 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 01-06-2024 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

अर्हत् उवाच
बालस्स मंदयं बीयं, जं च कडं अवजाणई भुज्जो।
मूढ़ की यह दूसरी मंदता है कि वह किए हुए पाप को नकारता है।

श्रद्धा होने के बाद संयम में पराक्रम है विशिष्टतम बात : आचार्यश्री महाश्रमण

वीतराग कल्प आचार्य श्री महाश्रमण के दीक्षा कल्याण महोत्सव का हुआ समापन

जालना।
22 मई, 2024

वैशाख शुक्ला चतुर्दशी, युवामनीषी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी का दीक्षा दिवस, जिसे धर्मसंघ युवा दिवस के रूप में मनाता है। आचार्यप्रवर के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष का भी आज समापन हो रहा है। आज से लगभग 50 वर्ष पूर्व मुमुक्षु मोहन की दीक्षा आचार्य श्री तुलसी की आज्ञा से सरदारशहर में मुनि श्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' के करकमलों से हुई थी। आप भारतीय ऋषि परम्परा के गौरव पुरुष हैं।

आज ही के दिन परम उपकारी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 2 वर्ष पूर्व सरदारशहर में मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को साध्वीप्रमुखा पद पर स्थापित किया था। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी तेरापंथ धर्मसंघ की नवम साध्वीप्रमुखा के रूप में शोभायमान हैं।

जन कल्याण के लिए समर्पित, संयम के सुमेरू, अध्यात्म के महासागर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर पावन पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया - जीव चौरासी लाख जीव योनियों में भ्रमण करता है। भ्रमण करते-करते जब यह मानव जीवन प्राप्त होता है वह एक विशेष बात हो जाती है। मानव जन्म मिलने के बाद धर्म के बारे में सुनने और जानने का मौका मिल जाये तो और विशेष बात हो जाती है। सुनी-जानी धर्म की अच्छी-सच्ची बातों पर श्रद्धा हो जाये तो और विशेष बात, श्रद्धा होने के बाद संयम में पराक्रम करने का उत्साह जाग जाये, संयम में पुरुषार्थ हो जाये यह तो मानो विशिष्टतम बात हो जाती है।

आज वैशाख शुक्ल चतुर्दशी है, वि.सं. 2081 है। आज से पचास वर्ष पूर्व वि.सं. 2031 वैशाख शुक्ला चतुर्दशी के दिन मुझे साधु दीक्षा लेने का महान सौभाग्य प्राप्त हुआ था। कोई-कोई मनुष्य ऐसे होते हैं जो बचपन में गार्हस्थ्य को छोड़ साधु का जीवन स्वीकार कर लेते हैं, अध्यात्म के पथ पर चलने के लिए तैयार हो जाते हैं।

मुझे परम पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी की आज्ञा से मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी लाडनूं ने आज के दिन दीक्षित किया था। साथ में मुनि श्री उदित कुमारजी स्वामी भी दीक्षित हुए थे। उनका एक संदेश मुझे दिया गया है। आज के दिन संन्यास मिला, मानों सोने का सूरज उगा था। संन्यास जीवन की आधी शताब्दी सम्पन्न हो गई, शताब्दी का उत्तरार्ध मानो शुरू हुआ है। आचार्यश्री तुलसी के अनुशासनत्व में दीक्षा हुई बाद में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में रहने का, साधना करने का, पढ़ने का, अध्ययन करने का अवसर मिला। गुरुओं का चिंतन था और भाग्य का योग था इस धर्म संघ में मैं एक बच्चे के रूप में दीक्षित हुआ था। मेरी संसारपक्षीय मां, संसारपक्षीय ज्येष्ठ भ्राता श्री सुजानमलजी दुगड़ का योग मिला। आज के दिन मां, परिवार भाई सब को छोड़कर मैंने संन्यास का जीवन स्वीकार किया। बाद में गुरुओं के चिन्तन से इस धर्म संघ का पूरा जिम्मा मुझे सौंप दिया गया। जहां बालक बनकर आया था उस धर्म संघ का सर्वोच्च दायित्व भी गुरुदेव श्री महाप्रज्ञजी ने सौंप दिया।

संन्यास और साधुता इतनी बड़ी चीज है कि उसके सामने भौतिक चीतें तो बहुत ही छोटी हैं, भौतिक सुविधाएं ना कुछ जैसी होती है। संन्यास तो चिन्तामणी रत्न है। संन्यास यानि अपने प्रभु के पास रहने का अभ्यास।

लाडनूं में प्रवेश –

मैने योगक्षेम वर्ष लाडनूं में करने की घोषणा की थी। उस सन्दर्भ में 6 फरवरी 2026 को लाडनूं में प्रवेश करने का भाव है। एक वर्ष से भी ज्यादा लाडनूं में प्रवास करने का भाव है। 2027 का मर्यादा महोत्सव करके यथासंभव सरदारशहर जाने का भाव है। पूज्यप्रवर ने घोषणा की - समणी अक्षयप्रज्ञाजी और समणी प्रणवप्रज्ञाजी का श्रेणी आरोहण कर सूरत में 19 जुलाई को साध्वी दीक्षा देने का भाव है। पूज्यवर ने आगे फ़रमाया - धर्मसंघ ने इतना बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया है। हमारे पचासवें दीक्षा कल्याण समारोह पर अनेक त्याग-संकल्प लेने का प्रयास किया है। गुरु गणेश तपोधाम परिसर में हमारा जालना का प्रवास हुआ है। स्थानकवासी साधु-साध्वियां भी आएं हैं, बड़ा सौहार्द का प्रयास इन्होंने किया है।

(शेष पेज 10 पर)

आपका व्यक्तित्व और जीवन मार्गदर्शक है

आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के रूप में समाज को नई दिशा देने का कार्य किया। आचार्य महाप्रज्ञजी विद्वान थे, उनकी लेखनी ने समाज को एक दर्शन देने का कार्य किया। आचार्य महाश्रमण जी ने तो एक इतिहास रच दिया। आपने तीन देश और 20 राज्यों में यात्रा कर आपने कितने लोगों के जीवन को परिवर्तित किया। पैदल चलकर समाज के अलग-अलग वर्गों के जीवन में अहिंसा के साथ दिशा देने का काम किया, करोड़ों लोगों को नशामुक्ति का संकल्प दिलाया। घने अंधकार जीवन जीने वालों को एक रोशनी देने का, दिया जलाने का काम किया। वह दिया अध्यात्म, धर्म और संस्कृति का दिया था। उस दिए से उनके जीवन परिवर्तन की राह बनी। आपने समाज के हर जाति, धर्म, वर्ग के मानव कल्याण के लिए कार्य किया। आपने व्यक्तित्व निर्माण के साथ उन्हें अहिंसा का मार्ग दिखलाया। आपका व्यक्तित्व और जीवन हम सबको मार्गदर्शन देता है। आपकी यात्रा वर्षों तक मानव कल्याण को दिशा देगी और देश व दुनिया में शांति, सद्भावना और नैतिकता का सन्देश देगी। आप सभी के आचार्य हैं, आपका योगदान हम सबको प्रेरणा देता रहेगा। आपकी प्रेरणा से यह सम्पूर्ण समाज सर्वजन हिताय के लिए काम करता है। मैं यही कामना करता हूँ कि आप शताब्दी तक जीएं और समाज को दर्शन देते रहें और दिये की तरह रोशनी देते रहें।

मंगलकामना स्वयं के प्रति

मैं मुनि श्री सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं' का स्मरण कर रहा हूं। वे मेरे दीक्षा दाता थे, उन्हें मैं वंदन करता हूं। आचार्यश्री तुलसी ने मुझे आगे बढ़ाया और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने तो अपना पूरा दायित्व मुझे सौंप दिया था। मैं उन दोनों का श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूं। मेरे संसार पक्षीय पिताजी श्री झूमरमलजी दुगड़, माताजी नेमा बाई ने मुझे धर्म की ओर आगे बढ़ाने, जोड़ने का प्रयास किया। भाईसाहब श्री सुजानमलजी के अनुशासन और साये में बहुत वर्ष रहने का मौका मिला। मेरी दीक्षा में भाई साहब का योगदान था। मेरा संन्यास का जीवन तेजस्वी से तेजस्वीतर, तेजस्वीत्तम बना रहे।

मंगलकामना धर्मसंघ के प्रति

साध्वीप्रमुखाजी का आज चयन दिवस है। आज तीसरा वर्ष शुरू हुआ है। आप भी धर्मसंघ को, साध्वियों, श्राविकाओं व अन्य संदर्भों में खूब अच्छी सेवा देते रहें। मुख्यमुनि, साध्वीवर्या, अन्य साधु-साध्वियां, समणियां व श्रावक-श्राविकाएं आध्यात्मिक सेवा करते रहें। सभी खूब विकास का कार्य करते रहें। मेरे सहदीक्षित मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी के भी आज दीक्षा के पचास वर्ष पूर्ण हुए हैं। मैं उनके प्रति भी मंगल कामना करता हूं। वे बहुश्रुत परिषद के सदस्य भी हैं। वे अपने ज्ञान व कर्मठता से धर्म संघ की सेवा करते रहें, अपनी साधना का भी विकास करते रहें।

साधना से मिल सकता है भीतर का सुख : आचार्यश्री महाश्रमण

वाघुल।
23 मई, 2024

वीतराग कल्प आचार्य श्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आदमी सुखी रहना चाहता है, दुःखी रहना नहीं चाहता। सुख दो प्रकार का हो सकता है, एक तात्कालिक सुख जो शुब्द, रूप, रस, गंध, और स्पर्श से प्राप्त होने वाला होता है।

दूसरा स्थायी सुख जो कर्म निर्जरा व संवर होने से मिलता है, वह आन्तरिक और आध्यात्मिक सुख होता है। इस तरह दो सुख हो गए - भौतिक सुख और आध्यात्मिक सुख।

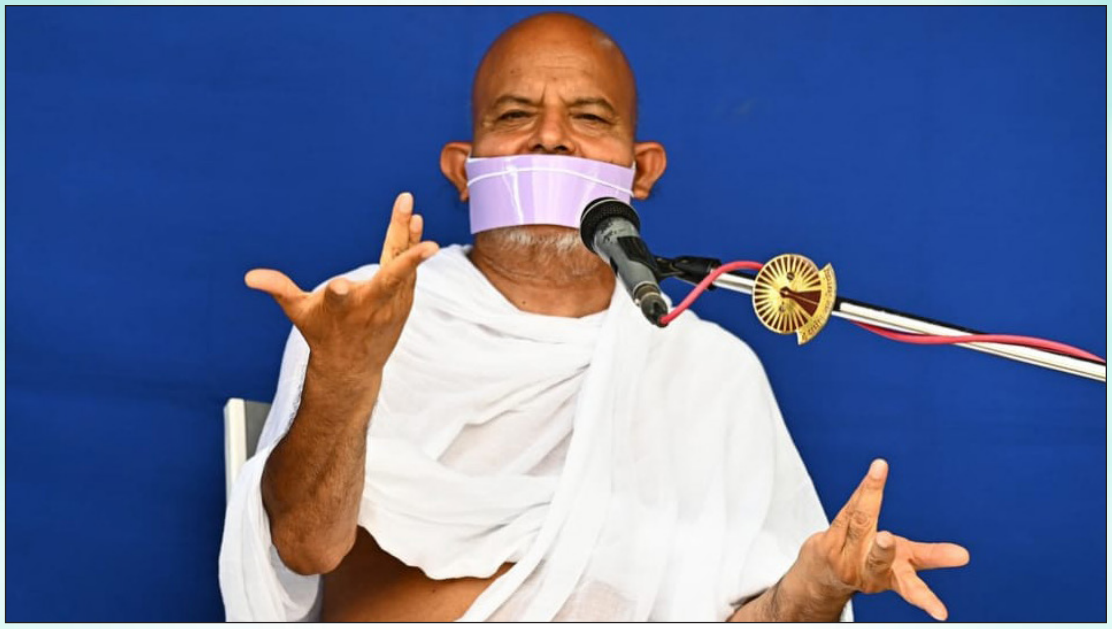

भौतिक सुख परिस्थिति जन्य, पदार्थ जन्य, विषय जन्य होता है। आध्यात्मिक सुख परिस्थिति मुक्त, पदार्थ और विषय मुक्त, शान्ति या सहज आनन्द के रूप में होता है। सुखी रहने की शास्त्र में कुछ बातें बताई गई हैं। पहली बात कि अपने आप को तपाओ, सुकुमारता को छोड़ो, कठिनाई को प्रसन्नता से झेलने का प्रयास करना। हम दुःख से डरकर भागे नहीं, मनोबल रखें, समता शांति में रहें। कैसी भी परिस्थिति हो उससे डरें नहीं, अपना सामंजस्य बना लें। कामनाओं का अतिक्रमण करें। ज्यादा चाह करो ही मत। द्वेष को छिन्न करो, किसी से ईर्ष्या मत करो।

दूसरों को सुखी देखकर हमें दुःखी नहीं बनना चाहिये और दूसरों को दुःखी देखकर हमें सुखी नहीं बनना चाहिये। अवांछनीय रूप में किसी से भी राग-मोह नहीं करना चाहिये। जहां राग-मोह होता है, वहां दुःख हो सकता है।

पदार्थों से कुछ सुविधा मिल सकती है पर भीतर का सुख साधना से मिल सकता है। चिन्तन अच्छा रखने से आदमी सुख-शांति में रह सकता है। हम शांति के लिए धर्म आराधना, अध्यात्म आराधना करें यह काम्य है।

मुनि ध्यानमूर्ति जी एवं न्यायाधीश गौतम चोरडिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

अरे प्यारे संतों !

● मुनि वृंद द्वारा समूह गीत संगान ●

अरे प्यारे संतो ! सुविनीत संतो ! सामने चलेंगे फकीर आ रहा है।
आर्यदेव बोले, अरे प्यारे संतो ! सामने चलेंगे फकीर आ रहा है।।

श्वेत है चेहरा ज्ञान है गहरा। शासन सेवा में, कभी नहीं ठहरा।
प्रखर प्रवक्ता, दर्शन मनीषी, उपकार करने वाला फकीर आ रहा है।।

बचपन में मुझको, गुरु कालू माला। पिलाया उसी ने संयम का प्याला।
तुलसी गुरु के, चरणों में मुझको, सौंप देने वाला फकीर आ रहा है।।

संतो को लेकर, गुरु-द्वारे आए। श्रावक-श्राविकाएं, छाए दाए-बाए।
साश्चर्य खुली है, सबकी निगाहें, कौन? किससे मिलने वाला फकीर आ रहा है।।

हाथ पकड़कर गुरु साथ लाए। दीक्षा प्रदाता ने भाव सुनाए।
सोचा था मैंने, शिखरों चढ़ेगा, (नहीं सोचा मैंने, दृश्य वो दिखेगा)
खुशियां मनाने वाला फकीर आ रहा है।।

भक्ति से भरकर, कंबल ओढ़ाया। आर्यदेव ने भी, फिर फरमाया।
मुनिवर पधारे, राज में हमारे, पहली बार मिलने वाला फकीर आ गया है।

पानी ले लाओ, चरणों को धोऊं। उपकारी मुनिवर से, उऋण होऊं।
खुदा की खुदाई, और क्या गवाही, इंसानी देह में ये खुदा आ गया है।।

जिसने भी देखा, विस्मय में डाला। अजब मसीहा है, नेमा का लाला।
विनय समर्पण, जीवन दर्पण, इंसानी देह में ये खुदा आ गया है।

लय - अरे द्वारपालो

बन गए सबके भगवान, गुरुवरम्

● साध्वी वृंद द्वारा समूह गीत संगान ●

जय हो, तेरी साधना, जय हो, तेरी शासना,
करते तुझको नमन, गुरुवरम्। झूमे खुशियों से मन, गुरुवरम्।
बालक मोहन था सौभागी, उभरा बन करके वैरागी,
कोई कहे तुझे पुण्यवान, बन गए सबके भगवान, गुरुवरम्।।

श्री कालू की फेरी माला, उतरा मन में नया उजाला,
संकल्पों की ज्योत जलाई, मिला साधना पंथ निराला।
मुनि सुमेर का योग मिला, संयम का नव पुष्प खिला।।

उजली-उजली भोर तुम्हीं हो, शासन के सिरमोर तुम्हीं हो,
चंचल मन की डोर तुम्हीं हो, भक्तों के प्रभु ठोर तुम्हीं हो।
कोई कहे तुझे उग्रविहारी, तुम निश्चय ही अतिशयधारी।।

सम, शम अरु श्रम की भेरी बाजे, करुणा से दिल तेरा राजे,
वत्सलता तेरे नयनों में शोभे, श्रुत देवी चरणन विराजे।
कोई कहे त्रिभुवन के त्राता, आत्मसुखों के तुम सन्धाता।।

देव ! भिक्षुशासन के तुम हो महेश, पदरज से मिटते हैं संकट अशेष,
वाणी में तेरे जादू भरा है, देती है प्रेरणा का टॉनिक विशेष।
युग-युग जिओ हे गणमाली, तुमसे आठों याम दिवाली।।

(लय - लागी तुमसे लगन)

कण-कण गाता है

● समणी वृंद द्वारा समूह गीत संगान ●

धरती गाती है, अम्बर गाता है,
कण-कण गाता है।
जब इस महीतल पर मोहन मन मुस्काते हैं,
परमार्थ की साधना।
जन्म पावन है, लक्ष्य पावन है, मार्ग पावन है,
परमार्थ की साधना।।

शुक्ला नवमी, नव सूर्योदय, दसमी भाग्योदय है,
चवदस बोली चार दिशाएं, मुखरित जय-जय-जय है।
युग-युग मिले शासना, परमार्थ की साधना।।

एक ध्येय है, सतत तुम्हारा, बनना राग विजेता,
द्वेष टिके ना उस नौका में, जिसको तू है खेता।
खुद तर कर तारना, परमार्थ की साधना।।

श्री कालू का ध्यान धरा तब, मिला नया उजियारा,
संयम की शुभ स्वर्ण जयंती, वर्धाए जग सारा।
मंगल करें कामना, परमार्थ की साधना।।

आज मराठा, कल गुजराता, परसों राजस्थाना,
जह-जह चरण पड़ेंगे तेरे मानव मन मस्ताना।
उत्सव मय जालना, परमार्थ की साधना।।

(लय - सत्यम् शिवम् सुन्दरम्)

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

एक विलक्षण अनुभव

● साध्वी कमनीयप्रभा ●

12 नवम्बर 2023 का दिन हम शैक्ष साध्वियों के लिए ऐतिहासिक दिन था। चारों ओर खुशियों का माहाल था। हमारी खुशी भी आसमान को छू रही थी। क्योंकि उस दिन हम कुछ छोटी साध्वियों ने पूज्यवर से निवेदन किया - प्रभो! आप अपनी सन्निधि प्रदान कर छोटे संतों की तरह हमें भी प्रतिदिन क्लास देने की कृपा करें, हमारे भीतर ज्ञान दीप जलाने की कृपा करें। पूज्यवर की चेतना निर्धूम दीप की तरह है। आपश्री की साधना व आपश्री की तपस्या से प्रकाश प्राप्त करने वाला हर साधक स्वयं प्रकाशित होता है और दूसरों को भी प्रकाशित करने में समर्थ हो जाता है। इसी भावना से ओत प्रोत हो हमने अपनी भावना को गीत के माध्यम से भी प्रस्तुत किया।

पूज्यवर ने हमारी भावना पर गौर करते हुए फरमाया ठीक है, हमारे सम्पर्क में रहना। हम सभी साध्वियां प्रसन्नमना अपने प्रवास स्थल पर आ गईं। दूसरे दिन प्रातः काल वंदना करने गये उस दिन भगवान महावीर का निर्वाण दिवस था। गुरुदेव ने छोटी साध्वियों को याद किया, एक-एक साध्वी को अपने सम्मुख खड़ा किया और हर महीने की 11 तारीख को गुरुदेव के सान्निध्य में 2.30 बजे क्लास हो सकेगी ऐसा फरमाकर हम नन्ही कलियों की झोली भर दी। हम कुल 10 साध्वियां थीं जिनका इस क्लास के लिए चयन किया गया और पूज्यवर ने इस क्लास का नाम दिया- 'शैक्ष साध्वी कक्षा' । योजनानुसार हर महीने की 11 तारीख को जहां भी हो, गुरुदेव के सान्निध्य में क्लास लगती है। उस क्रम में 11 मार्च 2024 कोंकण प्रदेश की यात्रा के दौरान गुरुदेव के साथ लगभग 24 साध्वियां थीं। शैक्ष साध्वियों की संख्या बहुत कम थी, केवल तीन ही साध्वियां थी। शायद तीन साध्वियों को देखकर गुरुदेव ने पूछा 'गीत याद है, थोड़ा सुना दो'। हम तीनों साध्वियों ने गीत सुनाना प्रारंभ किया- लगभग 1 पद्य सुनाया होगा, गुरुदेव ने पुनः पूछा- 'याद है ना, याद है ना- ठीक है'। आगे के होमवर्क का निवेदन किया। गुरुदेव ने कुछ भी नहीं फरमाया, हमें लगा होमवर्क दिलाने की मर्जी कम है। जयकारा पाकर हम वही बैठ गईं। हम परस्पर बतियाने लगीं। गुरुदेव पुनः पत्र वाचन में लीन हो गए। थोड़ी देर हुई कि पुनः कृपा की दृष्टि हुई। शैक्ष साध्वी कक्षा की साध्वियों को याद किया पुछवाया गुस्सा आता है। हम एक दूसरे को देखने लगे बाले- हां। गुरुदेव मुस्कुराए, करुणा दृष्टि बरसाए, फिर आगे बुलाकर प्रश्न किया- गीत याद है? लो सुनाओ। गीत 31 पद्य का था पूज्यवर ने पूरा सुनवाया, आगे के लिए होमवर्क दिया, डायरी में लिखवाया। फिर हमें इंग्लिश में स्टोरी फरमाई, सेवा का महत्व समझाते हुए फरमाया- एक खेत था, जिसमें एक किसान काम रहा था। अचानक उसने देखा, घोड़े पर सवार होकर एक तेजस्वी व्यक्ति उसके खेत की ओर आ रहा है। वह व्यक्ति उस खेत में किसान के पास पहुंचा। किसान ने उसे देखा। देवदूत समझकर प्रणाम किया। उसने किसान से गेहूं मांगे। किसान ने बिना मन ही उसे मुट्ठीभर गेहूं दे दिया। वह गेंहू को लेकर आगे चला गया और थोड़ी दूर जाने के बाद आंखों से ओझल हो गया। अगले दिन सुबह सूर्योदय के बाद किसान जब खेत में आया तो उसने देखा कि खेत में कुछ गेंहू चमक रहे हैं। उसने गेंहू को हाथ में लेकर देखा सचमुच वे सोने के हो गए थे। उसने जितने गेहूं उस व्यक्ति को दिए थे उतने ही सोने के हुए थे। वह सोचने लगा यह कैसा चमत्कार, इधर-इधर देखने लगा, कुछ भी दिखाई नहीं दिया। इतने में आकाश से आवाज आई- कल तुमने जो गेहूं दिए थे यह उसका परिणाम है। किसान को अब समझ में आया कि जितने मैंने गेहूं उसे दिए थे उतने ही गेहूं सोने के हुए हैं। कितना अच्छा होता मैं उसे गेहूं और दे देता। किसान उस व्यक्ति से पुनः और गेहूं लेने को कहा। तुम मेरा यह पूरा खेत ही ले लो। परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

इस कहानी से गुरुदेव ने हमें प्रतिबोध दिया कि हम जितनी सेवा करेंगे उतना हमें वापस मिलेगा। जितना हम दूसरों को नुकसाान पहुंचाएगे उतनी ही हमें नुकसान मिलेगा। घड़ी हाथ में लेकर दिखाते हुए फरमाया जैसे यह घड़ी समय बता रही है, एक-एक सैकेंड, मिनिट बीतता जा रहा है। जितना हम उपयोग कर लें, वह हमारा है जो समय बीत गया वह वापिस नहीं आता, वह निष्फल हुआ जानो। इस तरह पूज्यवर समय-समय पर छोटी-छोटी कहानियों से, दृष्टांतो से, हमारे भीतर ज्ञान दीप प्रज्वलित करने का प्रयास करते हैं। हमने ऐसा सुना है, देखा है व जाना है कि आचार्य महाश्रमण जी के चरणों में आने वाला कभी खाली हाथ नहीं जाता, आज हम छोटी सतियों ने भी यह साक्षात अनुभव कर लिया कि गुरुदेव शरणागत की छप्पड़ फाड़ झोली भरते हैं।

महाश्रमण महाकाव्य के हर पृष्ठ पर है साधना की सुवास

● साध्वी सलिलयशा ●

बूंद से सागर का परिचय पूछा जाए तो शायद वह असंभव है। आकाश में उदीयमान सूर्य का परिचय भी नहीं दिया जा सकता, उसका प्रकाश, उसकी ऊष्मा ही उसके परिचायक हैं। फूल का परिचय उसका विकसित रूप और सुगंध है। जिनका नाम स्वर्णिम इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है ऐसे महामहिम महामानव युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी का मैं क्या परिचय दूँ? आपके किन-किन गुणों को चुनूं? जैसे रसगुल्ले को जिधर से भी खाओ उधर से मीठा ही लगता है। वैसे ही आचार्य श्री महाश्रमण का जीवन जिधर भी देखो उधर गुण ही गुण दिखाई देते हैं।

"क्या लिखूं? कैसे लिखूं? कुछ समझ आता नहीं।
भाव भक्ति से भरा मन रुक भी तो पाता नहीं।।"

पर हृदय के सागर में जब भावनाओं के ज्वार-भाटे आते हैं तो हिलोरें मारती लहरों को होठों में दबाकर रखना संभव नहीं हो पाता। आचार्य श्री महाश्रमण जी के जीवन रूपी महाकाव्य के हर पृष्ठ पर साधना की सुवास है। हर पंक्ति में नई सोच, नई धारणा, नया दर्शन है। आपके विशद व्यक्तित्व, कुशल नेतृत्व एवं निष्णात नेतृत्व में निधि, सिद्धि, लब्धि, उपलब्धि और प्रसिद्धि का समागम है। आपकी सहजता, सरलता, निस्पृहता, निर्लिप्तता, निर्विकारता, आत्मीयता, पवित्रता और निश्छल व्यवहार में अनेक महापुरुषों की छवि नजर आती है।

आपश्री के हृदय में वैमनस्यता का विष नहीं, समन्वय और स्नेह का दरिया बहता है। आपके शरीर के रोम-रोम में दया, अनुकंपा व करुणा का महासागर लहरा रहा है। आपके नयनों में वत्सलता का निर्झर बह रहा है। आपके मुख मंडल पर असीम शक्ति की मुस्कान है। आपकी वाणी में आगम रूपी तत्व ज्ञान का पराग रहता है। आपके दिल में ज्ञान की सुगंध और आचार की सुंदरता है। आपके हर श्वास में आध्यात्मिक जागरण की गूंज है। आपके हाथों में आशीषों का आलोक है। आपके चरण कमलों में सिद्धि का स्थान है। आपके भीतर में अरिहंतों का वास है। आपका उपशम भाव विलक्षण है। कुल मिलाकर आपका व्यक्तित्व सत्यम शिवम सुंदरम की अभिव्यक्ति है। आपश्री की मंगल सन्निधि का एक-एक क्षण, मंगलदाई, सुखदाई एवं कल्याणकारी है। इसी कारण आप लोकप्रिय, सर्व वंदनीय, अर्चनीय हैं। आपश्री के बारे में जितना लिखे उतना ही अल्प है इसीलिए मैं कहती हूं- '

"शब्दों के ढांचे में कैसे बांध हूं, तेरी तस्वीर,
तेरा व्यक्तित्व है सागर सम गंभीर।
तेरे नयनों से बहता है, वात्सल्य का नीर,
लक्ष्य को सिद्ध करता है तेरे संयम का तीर।।"

गुरुदेव आपके विराट व्यक्तित्व के समक्ष मेरे शब्द छोटे पड़ जाते हैं। अनेकों प्रबुद्ध जन आप की स्तुति जिन उच्च शब्दों में करते हैं वे शब्द मेरे पास नहीं है। मेरे पास तो सिर्फ उच्च भाव है, श्रद्धा है, आस्था है। कहते हैं कि जैसे नभ में चमकते तारों को, सागर की तरंगों को, वर्षा के जल बिंदु को और मन के विचारधारा को गिनना असंभव है वैसे ही आचार्य श्री महाश्रमण जी के त्याग-तप व वैराग्य प्रधान जीवन की समस्त गुणराशि अकथनीय है। अंत में दीक्षा कल्याण दिवस के स्वर्ण जयंती की स्वर्णिम घड़ी की अभिवंदना में यही शुभकामना, मनोकामना कि प्रभु आप दीर्घायु हों, चिरायु हों, निरामय हों, शतायु हों। आपश्री युगों-युगों तक तक राज करें, मानवता तुम पर नाज करे, नित नूतन आगाज करें।

"गण गुलशन की बगिया में बनी रहे बसंत बहार।
तुम जियो हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार।।"

मानवता के महामंगल-आचार्यश्री महाश्रमण

● साध्वी रक्षितयशा ●

वंदन! वैशाख शुक्ला नवमी के उस मधुरिम पल को जब सरदारशहर की पुण्य धरा पर अहिंसा, संयम व मैत्री का दीप जलाने वाले दिव्य चेतना का अवतरण हुआ।

नमन! वैशाख शुक्ला चतुर्दशी के उस अमृतमय क्षण को जब ऋजुता, मृदुता तथा विनम्रता आदि अनेक गुणों से समृद्ध बालक मोहन ने संयम रत्न को अंगीकार किया।

अभिवंदन! वैशाख शुक्ला दशमी के उस स्वर्णिम पल को जब चतुर्विध धर्मसंघ को आचार्यश्री महाश्रमण के रूप में कोहिनूर हीरा प्राप्त हुआ तथा वे तेरापंथ धर्मसंघ के शहंशाह बन गए।

जय-जय ज्योतिचरण! जय-जय महाश्रमण!

भैक्षव शासन के भव्य भाल पर आचार्य सिंहासन का पद सुशोभित करने वाले देदीप्यमान महासूर्य हैं- आचार्य महाश्रमण! जिनकी अलौकिक रश्मियों से पूरा विश्व जगमगा रहा है। आपश्री के ऐतिहासिक कीर्तिमानों की सौरभ से सारा जहां सुरभित हो रहा है। प्रभो! आप के तेजोमय आभामंडल से निकलने वाली हर किरण जन-जन के लिए कल्याणकारी साबित हो रही है।

हे मानवता के महामंगल! आपकी आगम निष्ठा, आत्मनिष्ठा अनुशासन निष्ठा, मर्यादानिष्ठा, सत्यनिष्ठा बेमिसाल है। पुठवीसमे मुणी हवेज्जा, काले कालं समायरे, सोही उज्जुयभूयस्स, उट्ठिए णो पमायए आदि आर्ष वाणी से परिपूरित आपश्री का संपूर्ण जीवन जिनवाणी को समर्पित है। गुरुदेव ने नैतिकता की मशाल हाथ में लेकर अनैतिकता को दूर किया, नशा मुक्ति का अभियान चलाकर लाखों-लाखों लोगों को सुख के राजमार्ग पर प्रस्थित किया, सद्भावना का दीपक जलाकर अनेक लोगों की जीवन बगिया को रोशन किया तथा अणुव्रत चेतना का अमृत बांटकर लोगों की चेतना को जागृत किया। युग की धाराओं को मोड़ने वाले, नए-नए इतिहास का सृजन करने वाले तथा जन-जन की सांसों में बसने वाले युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण की परोपकारिता, श्रमशीलता, उदारता, समता विश्व वंदनीय है। आचार्य तुलसी द्वारा तराशे गए तथा आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा संवारे गए महायशस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी को हृदय की अन्तहीन गहराईयों के साथ वंदना! अभिवंदना!! अभ्यर्थना!!!

63 वें जन्मोत्सव पर - जय हो जय दिव्य दिवाकर की।
51 वें दीक्षोत्सव पर - जय हो जय संघ प्रभाकर की।
15 वें पट्टोत्सव पर - जय हो जय विश्वंद्य सर्वेश्वर की।

"जानकी को राम प्यारे, राधिका को श्याम प्यारे।
चंदना को वीर प्यारे, रक्षिता को गुरुदेव प्यारे।।"

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

अनगिनत विशेषताओं के धनी–मेरे प्रभु

● साध्वी नवीनप्रभा ●

शिष्य ने पूछा– गुरु हमारे लिए क्यों जरूरी हैं? गुरु ने पुछा - ये बताओ मां हमारे लिए क्यों जरूरी है? शिष्य ने कहा - मां नहीं हो तो हम संसार में नहीं आ सकते। गुरु ने कहा - ठीक वैसे ही गुरु नहीं हो तो हम इस संसार से मुक्त नहीं हो सकते। वास्तव में शिष्य के लिए गुरु एक अनमोल उपहार है। गुरु एक ऊर्जा है, एक शक्ति है जो शिष्य की जीवन नैया को पार लगाता है। मेरे गुरु आचार्यश्री महाश्रमणजी एक फौलादी स्फटिक चट्टान का नाम है, जिसका हर कोना पवित्र, उजला, निर्मल, सौम्य, बेदाग और पारदर्शी है। महाश्रमण उस फौलादी संकल्प का नाम है जिनके लिए यह कहा जाए तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि 'झुकना कभी सीखा ही नहीं, चाहे बाधाओं ने घेरा हो, रूकना कभी जाना ही नहीं, चाहे मंजिल कितनी ही दूर हो।' महाश्रमण उस वीतरागता का नाम है जिसमें हर वक्त राग-द्वेष से मुक्त मैत्री की वर्षा होती है।

मेरे गुरु के संयम, वैराग्य और प्रखर पुरुषार्थ को देखकर एक घटना याद आती है - एक बार समुद्र की तरंगें चारों और से चट्टान पर निरंतर आघात कर रही थी। चट्टान में किसी तरह का उतार या चढ़ाव नहीं था। चट्टान के इस भाव को देखकर नाविक ने उससे पूछा तुम पर चारों तरफ से आघात हो रहे हैं फिर भी तुम इतनी शांत। गंभीर स्वर में उसने कहा अगर मैं इसी में उलझकर रह गई तो दूर से आगत अतिथि को विश्राम देने के सौभाग्य से वंचित रह जाऊंगी। आचार्य महाश्रमणजी देश-विदेश की इतनी प्रलंब यात्राएं कर रहे हैं, इतना श्रम, अनेक परिस्थितियां, उतार-चढ़ाव, सर्दी-गर्मी आदि सहन कर रहे हैं फिर भी मन में कोई ऊहापोह नहीं, हमेशा मुस्कुराता चेहरा, आगमवाणी में मस्त। यदि कोई इनको पूछे, इतना सब क्यों? तो मेरे ख्याल से शायद मेरे गुरु का यही जवाब होगा कि यदि इन सबमें उलझकर मैं बैठ जाऊंगा तो जन्मों-जन्मों के संचित कर्म को मैं कैसे तोड़ पाऊंगा? यदि ये सब सहन नहीं करूंगा तो मैं अपनी सघन निर्जरा से वंचित रह जाऊंगा और जल्द से जल्द मैं अपनी मंजिल को कैसे प्राप्त कर पाऊंगा ? इसी चिंतन के कारण वो हम सबके मोटिवेटर हैं। लगता है आचार्यश्री महाश्रमणजी अपने पूर्व जन्मों की विशिष्ट तप-त्याग एवं संयम की साधना के फलस्वरूप अनगिनत विलक्षणताओं को साथ में लेकर इस संसार में जन्मे हैं। मेरे प्रभु की अनगिनत विलक्षणताओं को बता सकूं मैं इतनी सक्षम तो नहीं हूं फिर भी कुछ बताने की कोशिश कर रही हूं :-

भविष्यदृष्टा– जब मैं पारमार्थिक शिक्षण संस्था में थी तब कुछ समय बाद स्वास्थ्य ज्यादा ही गिरने लगा। धीरे-धीरे सब के लिए चिंतन का विषय बन गया। माता-पिता इधर-उधर दिखाने लगे। कोई राहत नहीं मिली, चारों ओर से उनको कहा जाता इनको दीक्षा मत दो, इनके योग ही नहीं हैं और कुछ रास्ता अपना लो। मैंने कहा दीक्षा के अलावा अन्य कोई मार्ग मेरे लिए संभव नहीं है। सन् 2006 में पूज्यप्रवर आचार्य महाप्रज्ञजी लुधियाना में विराजमान थे। मैंने युवाचार्य प्रवर से निवेदन किया - मैं क्या करूं? मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है। युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया - क्यूं? क्या हुआ? मैंने निवेदन किया मेरा स्वास्थ्य ज्यादा ही डाऊन हो रहा है। मैं क्या करूं? घर जाऊं या यहां रहूं ? आपश्री ने फरमाया - तुम्हारी क्या मानसिकता है? मैंने कहा मानसिकता तो दीक्षा की है पर मुझे दीक्षा कौन देगा? क्या आप मुझे दीक्षा देंगे? इस उलझन के साथ आंखों में आंसू देख आपश्री ने वात्सल्यभरी मुस्कान के साथ फरमाया तुम क्यों चिंता करती हो? मैं बैठा हूँ ना? तुम्हारा स्वास्थ्य भी ठीक हो जाएगा और दीक्षा भी हो जाएगी, तुम्हें और कुछ चाहिए क्या? एक ही क्षण में मेरे प्रभु ने मुझे सब कुछ दे दिया और कई ज्योतिषियों की वाणी भविष्यवाणी गलत हो गई। आज दीक्षा के 11 साल हो गए। वास्तव में जिसके सिर पर ऐसे गुरु का वरदहस्त होता है वहां शुभ ही शुभ होता है। वही मेरे दीक्षा गुरु बने।

करुणा के अथाह सागर– अभी पुणे से औरंगाबाद की ओर पूज्यप्रवर का विहार हो रहा था। एक दिन भूल से रास्ता दूसरा ले लिया बाद में पता चलने पर हम तीन साध्वियां वापिस मुड़ी। लगभग 5-6 किमी चलते रहे फिर हम लोग पानी पीने के लिए रूके। उसी रास्ते पर पूज्यप्रवर का पधारना हुआ, हम लोगों ने वंदना की, आपश्री ने प्रश्न भरी दृष्टि से हमको देखा, हमने निवेदन किया आज चक्कर पड़ गया। इतने बड़े धर्म संघ के नेता जो एक छोटी साध्वी के लिए विहार करते रूक गए, यह उनकी उदारता थी। आपश्री ने फरमाया तुम्हारा यह बोझ संतों को दे दो। हमने मनाही के रूप में निवेदन किया। जहां ऊपर सूर्य अपना आतप दे रहा था और धरती नीचे से तप रही थी वहां पर ज्योतिचरण वात्सल्यरूपी शीतलता की वर्षा करा रहे थे। हमें करुणा रस से तृप्त कर रहे थे। ठिकाने पर पधारे तब साध्वीवर्याजी ने निवेदन किया कि तीन साध्वियां नहीं आई हैं। आपश्री ने फरमाया वो हमें रास्ते में मिल गई थीं, अब तो वो आती ही होंगी, रूचिर और दो बहिनें गौरव-नवीन थी। वो प्यासी होगी, उन्हें पानी पीला दो। सतियां सामने आई, पानी पिलाया और बताया कि गुरुदेव ने हमें भेजा है। वास्तव में वो पल कुछ अलग से ही थे। जो करुणानिधान की करुणा को पाकर आह्लाद भर रहे थे।

अनन्त ऊर्जा के धनी– कहा जाता है पर्वत में ऊंचाई होती है लेकिन गहराई नहीं होती, सागर में गहराई होती है पर ऊंचाई नहीं होती। पर मेरे प्रभु इन दोनों के समन्वय का रूप हैं। भीलवाड़ा चतुर्मास में संसारपक्षीय भतीजा हमारे पास आया बोला - बुआ महाराज ! आज तो चमत्कार हो गया। हमने कहा- क्या हुआ? उसने कहा- देखो पिताजी का हाथ। हमने पूछा- यह कैसे हुआ? संसारपक्षीय भाई ने बताया गुरुदेव का मंगलपाठ सुना और हाथ पूरा ऊपर करके बताया कि यह ठीक हो गया। जहां भयंकर एक्सीडेंट के बाद डॉक्टर ऑपरेशन करके भी गारंटी नहीं दे सकते थे वहां एक मंगलपाठ से ठीक हो गए। कुछ समय बाद संसारपक्षीय भाई का स्वास्थ्य खराब हुआ, बी.पी., शुगर एकदम बढ़ गया डॉक्टर ने काफी ट्रीटमेन्ट किया पर ठीक होने का नाम ही नहीं, तब संसारपक्षीय भाई ने पूज्य प्रवर का एक फोटो लेकर तकिये के नीचे रख दिया और कहा कि चिंता करने वाले अब ये हैं इन पर छोड़ देते हें। ऐसा हुआ कि कुछ समय में वह काफी ठीक होने लगा। यह है मेरे प्रभु की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष ऊर्जा का चमत्कार। प्रश्न होता है यह सब कैसे हो सकता है? वहां समाधान मिलता है मेरे गुरु की परोपकार की भावना, उत्कृष्ट कोटि की साधना और उत्कृष्ट कोटि की सहिष्णुता के कारण यह संभव हो सकता है।

आकर्षक व्यक्तित्व– आचार्य प्रवर कई बार फरमाते हैं कि चेहरे की सुंदरता उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितनी भीतर की सुंदरता है। परंतु आचार्य प्रवर का व्यक्तित्व तो भीतर और बाहर दोनों ओर से ही सुंदर है, जो सबके लिए आकर्षण का विषय बना हुआ है। मुंबई चतुर्मास के बाद पूज्य प्रवर शहर में भ्रमण करवा रहे थे। दादर में एक स्थानकवासी युवक दर्शन करने आया। उसने हमें कहा कि मुझे आपके गुरु के दर्शन करने हैं। हमने कहा 4 बजे मंगलपाठ और 8 बजे चरण स्पर्श का समय है। हाथों-हाथ वह युवक, जो स्थानकवासी था, अपने परिवार को लेकर आया, देखते ही आचार्य प्रवर से आकर्षित हुआ और कहा मैं तो इनसे बहुत ही प्रभावित हुआ। हमने पुछा कैसे? उसने कहा पहले मैंने सुना था, फिर सोचा इतने लोग इनके पास आते हैं तो कुछ न कुछ इनमें जरूर होगा, फिर मैंने इनका फोटो देखा तो लगा इतना आकर्षक व्यक्तित्व और जब अभी मैंने इनके दर्शन तब इनका भीतर-बाहर का सौंदर्य, इनका तेज, पवित्रता, मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता। इतने लोगों का आना, इनके बारे में इतना बताना, लेकिन कब से दर्शन करने की इच्छा आज पूरी हुई। वास्तव में आपके गुरुदेव महान हैं। अगले दिन लगभग पूरे दिन वह युवक गुरुदेव के सान्निध्य में रहा।

ऐसे गुरु की अभ्यर्थना करते-करते लगता है कि यह जिह्वा और हाथ सब पवित्र हो गया है। ऐसे गुरु जो हमें प्राप्त हैं, ऐसा तेरापंथ हमें विरासत में मिला है। मेरी जीवन नैया के तारणहार, दीक्षा प्रदाता, जिनके लिए जनता की सेवा भगवान की सेवा के तुल्य है, जिनके लिए वे सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार रहते हैं, ऐसे महान गुरु के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव, जन्मदिवस और पट्टोत्सव के उपलक्ष में यही मंगल कामना करती हूं कि आप हमेशा निरामय रहते हुए हम सबकी डोर को थामते हुए तेरापंथ धर्मसंघ का युगों-युगों तक संचालन करते रहें और आपकी छत्र-छाया हमेशा हम पर बनी रहे यही मंगल कामना।

तीर्थंकर सम तीर्थपति

● साध्वी नीतिप्रभा ●

तीर्थंकर सम तीर्थपति, महाश्रमण भगवान।
तोरण द्वार बंधाएं, विरूदावलियां गाएं।।

आसमां से बरसे अमी, अवनि लहर लहराए,
पवन ढोलावे चवर, ऋचाएं गुनगुनाएं।
सिन्दुरी ले उतरा सूरज, करने वर्धापन आज,
स्वर्णिम जयंति मनाएं।।

करुणा के झरने झरते, निरखें नजारें,
प्रभो! दुखियारे तेरे, चरण पखारें।
मुस्कानों के झरनों से, मिट जाते सब संताप।।
जन-जन भाग्य सराएं।।

अल्पभाषिता तेरी, सागर से गहरी,
तेरे अनमोल वचन, संघ के प्रहरी।
हर आखों में तेरा आसन, धरते तेरा ही ध्यान,
ये दृष्टि सृष्टि बन जाए।।

नेमा नंदन लो मेरा, शत-शत वंदन,
भावों से भरा मन, यहीं अगर चन्दन।
हम हैं तेरे दास प्रभो! करें यही अरदास।
युगों-युगों राज कराएं।।

शुभ उत्सव आया है

● साध्वी गुरुयशा ●
● साध्वी जयंतप्रभा ●

प्रभु दीक्षा स्वर्ण जयंति, शुभ उत्सव आया है।
गण उपवन में खुशियां, नव रंग छाया है।

सरदारशहर की पावन धरती मुसकाई है।
मां नेमा झूमर कुल में बाजी शहनाई है।
देव कुंवर सा नंदन, सबके मनभाया है।।

मुनि सुमेर नजरों को हीरा अमूल्य मिला।
तुलसी महाप्रज्ञ चरणों में जीवन मंदार फला।
मंत्री मुनि संबोधन से, दीक्षा गुरु को विरूदाया है।।

अमृत देशना तेरी, जन-मन पीड़ा हरती।
कल्पवृक्ष की छाया रीति गागर भरती।
करूणा का दरिया प्रभु के दिल में लहराया है।।

कीर्तिमानों के स्वस्तिक रच स्वर्णिम इतिहास गढ़ा।
भैक्षव शासन का गौरव दुनियां में शिखर चढ़ा।
देख विनम्रता प्रभु की, जन-जन चकराया है।।

पुण्योदय से पाई, चरण निधि भारी।
गुरुदृष्टि जीवन सृष्टि खिल जाये फुलवारी।
ज्योति चरण शरण में, गुलशन विकसाया है।।

लय - ओ कागद दे गयो

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

आचार्यश्री महाश्रमण की महिमा अचिन्त्य

● साध्वी शुभ्रयशा ●

आचार्य महाश्रमण के आभामंडल में पराक्रम की ऊर्जा तरंगें तरंगित होती रहती हैं क्योंकि मुदित और महाश्रमण दोनों का आद्य अक्षर मकार है। ज्योतिष के अनुसार यह नाम सिंह राशि का है। सिंह राशि पराक्रम की राशि है। इसके साथ यदि दो मकार का योग और हो जाता है तो यह त्रिपुटी बहुत शक्तिशाली बन जाती है। आपश्री के जीवन की अन्यान्य विशेषताओं के साथ मकार द्वय का सहचार बहुत महत्वपूर्ण है। विशेष इस प्रकार हैं -

01. मुस्कान/मुस्कुराहट
02. मंगलपाठ

इन दोनों के प्रथम अक्षर मकार होने से ये भी सिंह राशि के हो जाते हैं। सिंह राशि के नाम का सिंह राशि के साथ योग होने से ये आपके यश, कीर्ति में योगभूत बनते हैं।

मुस्कान/मुस्कराहट क्या है?

मुस्कुराहट जीवन की रोशनी है। इसे खरीदा अथवा बेचा नहीं जा सकता। यह एक ऐसा धन है, जिसे उधार भी नहीं दिया जा सकता है। विज्ञान के अनुसार मुस्कुराहट के कारण चेहरे की लगभग 365 मांसपेशियां सक्रिय होती हैं। जो ब्रेन को भी एक्टिव रखने में सहयोगी बनती हैं। पाश्चात्य दार्शनिकों का ऐसा मानना है कि मुस्कुराहट थके हुए व्यक्ति का आराम है, निराश के लिए आशा की किरण है और दर्द के लिए प्रकृति की सबसे श्रेष्ठ दवा है। क्योंकि मुस्कुराहट से एंटीबॉडी का निर्माण होता है। एंटीबॉडी व्यक्ति की उसी प्रकार रक्षा करती है जिस प्रकार समुद्र में डूबते हुए व्यक्ति के लिए 'टापू'।

जर्मन के भौतिक शास्त्री हार्ट मैन ने धरती से निकलने वाली ऊर्जा को मापने का एक यंत्र बनाया जिसका नाम है 'लोब एंटीना', इससे जाना गया कि प्रसन्नता और सुवासित वस्तुओं से एक उच्चस्तरीय ऊर्जा निकलती है जिसे 'टेलुरिक' ऊर्जा कहा जाता है। यह ऊर्जा सकारात्मक आभामंडल से भी निकलती रहती है। जब व्यक्ति मुस्कुराता है तो उसके आभामंडल में पवित्र भावधारा बहती है और वह भावधारा ही मुस्कुराहट के साथ दूसरे व्यक्ति को गुड फीलिंग करवाती है। मिशिगन यूनिवर्सिटी के मनौवैज्ञानिक प्रोफेसर जेम्स वी मेकानल के अनुसार दिल से निकलने वाली सच्चे मुस्कान की तरंगों से आस-पास का परिसर बदल जाता है तथा व्यक्ति के हृदय को भी बदला जा सकता है।

मुस्कुराहट - जीवन की संपदा

किसी भी कोण से अनुभव किया जा सकता है कि पूज्यवर की मुस्कुराहट सच्ची है, अच्छी है। यह न केवल दिल से निकलने वाली है बल्कि दिल को छूने वाली भी है। यह आपके आकर्षक व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इससे कितने लोगों को सकून मिलता है, आंकलन करना कठिन है। 2 अप्रैल 2024, पूना से कुछ लोग दर्शनार्थ आए। गुरुदेव की उपासना करने के बाद साध्वियों की सेवा करने के लिए उनके स्थान पर भी आए। उन्होंने कहा- 'महाराज ! आज तो म्हारो आणो सार्थक हुग्यो, म्हैं धन्य-धन्य हूग्या'। हमने पूछा कैसे? क्या हुआ? उन्होंने कहा आज गुरुदेव ने हम सभी को मुस्कुराहट के साथ बार-बार जयकारा दिया। ऐसा तो हमें पूने में भी कभी अनुभव नहीं हुआ, जैसा आज हुआ। इतना ही नहीं हमने जो निवेदन किया वह भी मुस्कान के साथ अच्छी तरह से सुना। हमारी थकान मिट गई। वास्तव में आचार्य महाश्रमण की मुस्कान लाखों-लाखों लोगों के तन और मन की दवा है। इसका प्रभाव दिखाई दे न दे चिरस्थायी होता है। यह एक ऐसी ताकत है जो व्यक्ति को अपनेपन के धागे से बांध लेती है।

मुस्कान - सुकून और संपदा

4 मई 2024, दो स्थानकवासी बहिनें गुरुदेव के दर्शन कर साध्वियों के पास कुछ जिज्ञासा समाधान करने के लिए आई। उन्होंने जब साध्वियों के साथ वार्ता की, उस दौरान बताया कि आचार्य श्री के दर्शनमात्र से उनके मुस्कुराहट भरे चेहरे को पल भर निहारने मात्र से उन्हें बहुत शांति मिली। आज हमें इस बात का दुःख है कि हमने इतने वर्षों तक महाश्रमणजी के दर्शन क्यों नहीं किए?

इस प्रकार के अनेक घटना प्रसंग हैं जिन्हें लिपिबद्ध करना कठिन हैं। इन्हें टेलूरिक ऊर्जा के संदर्भ में समझा जा सकता हैं क्योंकि पवित्र आभा वलय से टेलूरिक ऊर्जा तरंगे निकलती हैं ये तरंगे ही जन-जन का उद्धार करने वाली बन जाती हैं। इसी भावना से प्रेरित होकर सुकरात ने कहा था कि जिसके पास मुस्कुराता हुआ चेहरा है उसके पास दुनिया की सारी सम्पदाए हैं। अध्यात्म से अनुप्राणित आचार्यवर की मुस्कान बिना बोले ही लोगों के लिए संतुष्टि का आत्मतुष्टि का हेतु बनती हैं।

महात्मा कौन? - 'मनस्येकं वचस्येकं कायेचैकं' महात्मनाम्'

जिसके मन, वचन और काया की प्रवृत्ति एक दिशा गामी होती है, वह महात्मा होता है। आचार्य महाश्रमण के मन में मध्यस्थ भाव है, वाणी में ज्ञाता-दृष्टा भाव है और काया में स्थितप्रज्ञता है, इसलिए आप महान हैं व आप का मंगलपाठ भी महान है। अनेकानेक जीवन्त प्रसंगों से पाठक केवल एक घटना से जान सकेंगे कि मंगलपाठ का प्रभाव अचिन्त्य कैसे होता है।

अचिन्त्य प्रभावकारी मंगलपाठ

वालाजाबाद निवासी महावीर पीपाड़ा, मुम्बई नंदनवन में सेवा कर रहे थे। उनकी धर्मपत्नी की इच्छा थी कि इस बार दीपावली घर पर ही मनाऐंगे, इसलिए उन्होंने 08.11.2023 के फ्लाइट के टिकट बना लिए। वे लगभग 12.05 मिनिट पर पूज्य प्रवर के दर्शन करने मंगलपाठ सुनने गए। उस समय समणीजी सेवा कर रहे थे। उन्हें सेवा का समय 12.10 मिनिट का दिया गया। उनकी पुत्रवधु ममता ने कुछ जिज्ञासाएं श्री चरणों में निवेदित की इसलिए मंगलपाठ श्रवण में कुछ विलम्ब हो गया। गुरुदेव ने उन्हें ठीक 12.17 मिनिट पर मंगलपाठ सुनाया। ठीक उसी समय उनके दोनों जुड़वा पुत्र- राकेश व मुकेश का एक्सीडेंट हो गया। एक्सीडेंट बहुत जबरदस्त था। गाड़ी स्लिप हो गई, इस पार से उस पार जाकर पलटी खा गई। गाड़ी के हालात देखकर तो कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि इसमें यात्रा करने वाला कोई जिंदा रह सकता है क्या?

महावीर जी को जब ज्ञात हुआ कि उनके दोनों पुत्रों का एक्सीडेंट हो गया, गाड़ी चकनाचूर हो गई पर दोनों पुत्र सुरक्षित है तो उन्होंने कहा- यह तो गुरुदेव के मंगलपाठ का प्रभाव है। क्यों हुआ, कैसे हुआ? इसकी व्याख्या मैं नहीं कर सकता जो हुआ वह साक्षात् था। संतो ने हमें मंगलपाठ का समय 12.05 बजे का दिया। हम समय पर उपस्थित हो गए। पूज्यवर द्वारा 12.17 बजे पर पूज्यवर द्वारा मंगलपाठ सुनाना और उसी समय गाड़ी का एक्सीडेंट होना तथा दोनों भाईयों को यह महसूस होना कि हमें कोई बचा रहा है, ऊपर ही ऊपर हमारी रक्षा हो रही है। हम मौत को सामने देख रहे हैं फिर भी कोई घबरा नहीं रहे हैं। यह कोई कहानी, आख्यान अथवा चमत्मकार नहीं है यह दोनों भाईयों के साक्षात् अनुभव की प्रस्तुति हैं। यद्यपि राकेश पीपाड़ा के हल्की चोट आई। वह गाड़ी ड्राइव कर रहा था। किन्तु प्राथमिक चिकित्सा के बाद उसी समय घर पर आ गया।

प्रश्न है हम अपनी बुद्धि से इसका क्या समाधान खोज सकते हैं? हम यह तो अनुभव करते हैं कि एक-एक शब्द मंत्र बन जाता है। जयाचार्य ने 'भिक्षु म्हारै प्रगट्याजी' गीत में लिखा है- "मंत्राक्षर सम नाम तुम्हारो, विघ्न मिटै घर-घर में"।

आचर्य महाश्रमण का मंगलपाठ भी मंत्राक्षर है क्योंकि आप एक दिन में सैंकड़ो-सैंकड़ों बार मंगलपाठ का उच्चारण मन, वचन व काया की स्थिरता व एकरूपता से करते हैं। ये तरंगें न केवल आपके आभामंडल को सशक्त करती है अपितु सुदूर तक अपना प्रभाव छोड़ सकती है। आज के युग में तो यह बात और सरलता से स्पष्ट हो जाती है। तंरगें तरंगों को प्रभावित करती हैं और तंरगें तरंगों से प्रभावित होती भी हैं। इसे हम ऊर्जा का, तरंगों का, गुरुवाणी का अचिन्त्य प्रभाव कह सकते हैं।

(पृष्ठ 15 का शेष) मुख्यमुनिश्री...

वहां जाने से संत-संतियों के सम्पर्क में आया। मुनिश्री पानमलजी थोड़ा सिखाया करते। पिछले जन्मों के संस्कारों से संतों से एक लगाव हो गया। थोड़े समय में ही साधु बनने का निश्चय कर लिया। फिर मैं अन्तर की रूचि से संतों के यहां जाने लगा।

मुख्यमुनिश्री - भंते! जब गुरुदेव हिन्दी माध्यम स्कूल में पढ़े थे। दीक्षा के बाद संस्कृत भाषा का व अंग्रेजी भाषा का विशेष अध्ययन किया। दोनों भाषाएं अलग सी दिशाओं में जाती हुई दिखाई देती है। तो परम पूज्य गुरुदेव ने इतना शीघ्रता से किस प्रकार संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं पर एक कमांड स्थापित कर ली? इसका क्या रहस्य है? इतना शीघ्रता से विकास कैसे हो गया?

आचार्यप्रवर - दीक्षा के बाद में मैंने दसवेंआलियं तो जल्दी सीख लिया फिर संस्कृत के कालूकौमुदी और नाम माला इनको सीखा। इनकी साधनिका करने में मुझे कई वर्ष संस्कृत का अध्ययन करने का मौका मिला। फिर थोड़ा दिमाग भी खुलता गया। कालू कौमुदी कंठस्थ की, कालू कौमुदी के उत्तरार्ध में ऊणादी के दस पृष्ठ हैं उनको मैंने कंठस्थ नहीं किया, बाकी संभवतः पूरी कालू कौमुदी मैंने वृत्ति सहित कंठस्थ की। पूरी नाम माला को याद कर लिया। ये दो तैयार हो जाये तो संस्कृत का एक आधार हो सकता है। फिर कुछ ग्रन्थों को पढ़ा। थोड़ा क्षयोपशम का ही मानले कि संस्कृत में यूं काफी दिमाग खुल गया। व्याकरण की दृष्टि से अशुद्धि पकड़ में आ जाती। भिक्षुशब्दानुशासनम् को मैंने प्रायः कंठस्थ करने का प्रयास किया। हालांकि मैं अपने आप को संस्कृत का बहुत ज्यादा विद्वान नहीं मानता परन्तु भूल न हो, यहां जो संत हैं उनमें प्रायः किसी से कम अध्ययन भी मेरा नहीं है।

अंग्रेजी को सीखने में बहुत समय लगाया। दीक्षा लेने से पहले ही अंग्रेजी का अध्ययन शुरू हो गया था। जब-जब मौका मिलता भंवरलालजी बैद सरदारशहर वाले आ जाते, कोई टीचर या अन्य मिल जाता। दोनों गुरुओं का भी कहना था कि अंग्रेजी भाषा अच्छी हो जाए। उनकी प्रेरणा, उनकी व्यवस्था, मेरा कुछ पुरूषार्थ कि आज कोई पत्र अंग्रेजी का आ जाये तो दूसरों को बुलाने की अपेक्षा नहीं पड़ती। ज्यादा अध्ययन नहीं है, काम चल जाता है।

मुख्यमुनिश्री - पूज्य गुरुदेव अनेक बार साधु-साध्वियों की, श्रावक-श्राविकाओं की ज्ञान चर्चा होती है। अनेक मिटिंग होती है, उनमें अनेक जिज्ञासाएं व अनेक बातें आती है। उनको आप अकाट्य तर्क के द्वारा उनका निराकरण कर लेते हैं। प्रबल क्षयोपशम से तर्क के द्वारा उसको निरस्त कर देते हैं। मेरे मन में जिज्ञासा है कि भगवान! आपने किसी तर्क शास्त्र का विशेष अध्ययन किया था या ये आपका साधना का प्रभाव है या ज्ञानावरणीय क्षयोपशम का प्रभाव है?

आचार्यप्रवर - दुनिया में कितने बड़े-बड़े ज्ञानी तार्किक हैं। तर्क शास्त्र जैसे भिक्षु न्याय कर्णिका थोड़े-थोड़े पढ़े हैं। पर बहुत ज्यादा तर्क की दृष्टि से इतनी बात नहीं है। थोड़ी भीतर की एक चेतना रही है उस चेतना के आधार पर मैं कुछ तार्किक दृष्टि से बात को प्रस्तुत करने का और कुछ भीतर का भाव समर्पण है कि मैं बात को तर्क संगत रूप में बताने का और अपनी बात को प्रस्तुत करने का और कहीं दूसरे की बात खंडन करने का भी प्रयास करता हूं। पांच चीजें न्याय में आती है- प्रतिज्ञा, हेतू, दृष्टान्त यूं पांच हैं, मुख्य ये तीन बात है। मेरा यह चिंतन है कि कोई बात कहनी हो उस बात से मैं सहमत हूं या नहीं। बिना सहमति वाली बात कहूं ही नहीं, फिर उसके ये हेतु हैं और ये उदाहरण है। किसी काम के लिए क्या, क्यूं और कैसे इन प्रश्नों के आलोक में किसी की बात को देख ले।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

वन्दन चरणों में

● 'शासनश्री' साध्वी सुव्रता ●

सौ सौ वन्दन, है अभिनन्दन, जैन जगत के अभिनव स्पंदन।
नेमा मां के प्यारे नंदन।।

गण में आई आज दिवाली, छाई कण-कण में खुशहाली।
पुलकित है हर पल्लव डाली।।

जन्म जयंती आज मनाती, आस्था के हम दीप जलाती।
भव्य भाल पर तिलक लगाती।।

दशों दिशाएं मंगल गाती, धरती स्वस्तिक दिव्य रचाती।
स्वागत में उपहार सझाती।।

तुलसी प्रभु ने लिया परीक्षण, उसमें मिली सफलता क्षण-क्षण।
जीया जागरूक बन जीवन।।

महाप्रज्ञ का सिर पर साया, बनकर रहा तूं तन की छाया।
सूरज बनकर तूं चमकाया।।

श्रम की बूंदों का अभिसिंचन, भैक्षव गण को मिल रहा क्षण-क्षण।
तब हो रंग खिला मन भावन।।

महाश्रमण की सदा विजय हो, ईड़ा पीड़ा का नहीं भय हो।
संघ चतुष्टय बल अक्षय हो।।

मंगल भाव सजाएं हम

● साध्वी संघप्रभा ●

महातपस्वी महाश्रमण की गौरव गाथा गाएं हम।
दीक्षा कल्याणक उत्सव पर मंगल भाव सजाएं हम।।

धन्य धरा सरदारशहर की जहां तुम्हारा जन्म हुआ।
झूमर-नेमा अंगज को पा दूगड़ कुल कृतपुण्य हुआ।
मोहन से फिर महाश्रमण का, रोचक-वृत्त सुनाएं हम।।

भैक्षव शासन तुलसी युग में मुनि सुमेर से ली दीक्षा।
अप्रमत्त बन विनयभाव से पाई आध्यात्मिक शिक्षा।
अपरिमेय गुरु कृपा दृष्टि की, प्रेरक झलक दिखाएं हम।।

बढ़े प्रगति के प्रोन्नत पथ पर बने आन्तरिक सहयोगी।
चमके महाप्रज्ञ पट्टधर बन दिव्य अनुत्तर ध्रुवयोगी।
कीर्तिमान यात्रा दीक्षा के, सुन-लख कर चकराएं हम।।

युग प्रधान पद किया अलंकृत युग को नव आयाम दिए।
गूंजेंगे वे दिगदिगन्त में जो तुमने पैगाम दिए।
अनुकम्पा की जगे चेतना, निष्ठामृत सरसाएं हम।।

मुख्यमुनि साध्वीवर्या साध्वीप्रमुखा का चयन किया।
महाश्रमणी अमृत उत्सव, शासनमाता अधिमान दिया।
नए-नए इतिहास रचाएं, योगक्षेम मनाएं हम।।

तेजस्वी आभा संयम की, सुर नर श्रद्धा से झुकते।
बन जाती वह माटी चंदन चरण जहां तेरे टिकते।
लिखें समय के स्वर्ण भाल पर, तेरी पुण्य ऋचाएं हम।।

करें कोटिशः कोटि कामना, वर्ष करोड़ों राज करो।
शांति दूत शीतल किरणों से जगती का संताप हरो।
पाकर तेरी कुशल शासना, निज सौभाग्य सराएं हम।।

ज्योतिचरण तेरी शरण

● नचिकेता मुनि अनुशासन कुमार ●

ज्योतिचरण, तेरी शरण, हे महाश्रमण गुरुवर, तेरी जयकार हो।
ज्योतिचरण तेरी शरण, तुझमें रमे अंतःकरण।।

खोजा जमाने में सदा, गुरु तुम मिले सबसे जुदा।
मेरी चाह अंतस की मिटी, तेरे चरण चाहूं सर्वदा।।

हृदतंत्री के हो तार तुम, जीवन के रेखाकार तुम।
प्रगती, गती तुमसे मिले, जग जगती से उद्धार तुम।।
जो भी मिला, तुमसे मिला, कैसे कहूं गुरुवर, तेरा उपकार हो।।

जन्मों के अर्जित पुण्य है, पाकर कृपा हम धन्य है।
परमात्म का हो स्वरूप तुम, करुणा का रूप अनन्य है।।

तुम ही हृदय के हर्ष हो, अध्यात्म का उत्कर्ष हो।
आभावलय उज्ज्वल प्रखर, भक्ति का परम प्रकर्ष हो।।
कुदरत का तुम उपहार हो, आधार तुम गुरुवर, कि सुख मंदार हो।।

स्वर्ण जयन्ती आई है

● साध्वी करूणा प्रभा ●

संयम जीवन की स्वर्ण जयन्ती आई है।
भैक्षव गण में, खुशियां छाई है।

वैशाखी महिना कितनी हर्ष हिलौरें लाया।
देव कुंवर सा जन्मा, दुगड़ कुल पुण्याई है।।

वैशाखी महिना पाया, संयम सुमेर मुनिवर से।
मोहन मुदित बन, ऊंची करी चढाई है।।

वैशाखी महिने में, साझपति पद आया।
गुरू द्वय की नजरां, नेहिल पाई है।।

वैशाखी महिने में, पट्टोत्सव आया।
गण नायक पा, बगिया सरसाई है।।

पुण्य पौरसा महाश्रमण गुरू, पाकर भाग्य सरावां।
शुभ दृष्टि पा, कलियां विकसाई है।।

लय - ओ भैरूंजी थारो भक्त

महाश्रमण गुरु की जय हो

● साध्वी साधनाश्री ●

महाश्रमण गुरु की जय हो।
आयरियाणं के चरणों में हर पल मंगलमय हो।।

दीक्षा स्वर्ण जयंती गुरुवर तुमको आज बधाएं,
तेरी सन्निधि शीतल जलधर हर संताप मिताएं।
गुरु का साया सुख की शय्या हम सौभाग्य सराए,
भिक्षु के ज्यातिर्मय पट्टधर तेरी सदा विजय हो।।

प्रभु के नैन स्नेह का सागर वत्सल रस बरसाए,
मुख मुद्रा आनंद का सावन गम को दूर भगाए।
दोनों हाथों से विभु सबको शुभ आशीष दिराए,
दिव्य पुरुष की निर्मल आभा से हम ऊर्जामय हो।।

उन्नत संयम समता धृति को शत-शत शीष झुकाएं,
महाव्रतों की धवल पदरिया का हम गौरव गाएं।
गुरु तुलसी अरू महाप्रज्ञ की कृति जग में जश पाए,
श्री ह्री धी के अक्षय आकर, दीर्घायु सुखमय हो।।

जय हे जय ज्योति चरण

● साध्वी ऋजुयशा ●

जय हे जय ज्योति चरण,
जय हे जय-जय महाश्रमण, ओ मेरे भगवान।।
तुम्हीं मेरे राम हो, श्याम हो, वर्धमान हो, धरूं मैं नित ध्यान।।

तेरापंथ के प्राण तुम, संतो में हो शिरोमणि।
आभा अलौकिक है तेरी, चमकते ज्यों दिन मणि।
जादूभरी मुस्कान है, तुझ-सा नहीं उपमान है।।
जिनशासन की शान।।

निर्धन या धनवान हो, निर्बल या बलवान हो।
अत्राणों के त्राण तुम, करते जनकल्याण हो।
पुण्याई तेरी अजब, प्रशासन शैली गजब।
पौरूष के प्रतिमान।।

हरपल आत्मा में रमण, करते गुरुवर महाश्रमण
विश्व विभूति ने किया, देश-विदेशों में भ्रमण।
करूणा के भंडार हैं, महिमा अपरम्पार है।।
श्रद्धानत है जहान।।

भक्ति तेरी करती रहूं, शक्ति नेमासुत भरो।
भव सागर के पोत तुम, पार भवजल से करो।
मिले युग-युग शासना, 'ऋजुयशा' यह भावना।।
फलित हो अरमान।। ओ मेरे भगवान।।

लय - ए मेरे प्यारे वतन

वीतराग अवतारी हैं

● साध्वी प्रणवप्रभा ●

परम उपकारी है, महिमा न्यारी है, सदा आभारी है।
ज्योतिचरण गुरुवरम्, महाश्रमण गुरुवरम्।।

जन्म दिया, जीना भी सिखाया, जयं चरे चिट्ठे, ज्ञान कराया।
संयम में हम स्थिर रह पाएं, हमको इस योग्य बनाया।
भाव ये छलके हैं, शब्द सब हल्के हैं, ऋण ये भारी है।।

कल्याण दिन मैं, वर यही चाहूं, निज पर का कल्याण कर पाऊं।
इंगित का करके आराधन, 'बुद्धपुत्ती' शीघ्र बन जाऊं।
उपशम उत्तम है, बनाते सक्षम हैं, वीतराग अवतारी हैं।

मात-पिता सा गुरु का है साया, गुरु कृपा की रहे छत्र छाया।
सतत स्मति में रहता है जो अनुकंपा रस बरसाया।
मेरे भगवन् हम करते अर्चन हैं, बनके पुजारी हैं।

लय - तू कितनी अच्छी है

महासूर्य की रश्मि बनूं मैं

● साध्वी विशालयशा ●

महासूर्य की रश्मि बनूं मैं, आर्य मुझे वरदान चाहिए।
रहो निरामय ज्योतिवलय तुम, चरणों में बस स्थान चाहिए।।

तात तुम्हीं हो मात तुम्हीं हो, मेरे तो प्रभु भ्रात तुम्हीं हो,
है सर्वस्व समर्पित तुझको, भाग्य विधाता नाथ तुम्हीं हो।
सफल बने जीवन का हर क्षण, वीर्य और उत्थान चाहिए।।

शीतल सन्निधि लगती सुखकर, प्रमुदित रहता है मन
मधुकर,संयमनिष्ठा श्रम सम शम की पुण्यत्रयी है तेरी सहचर।
ध्यान योग की करूं साधना, तुम जैसा अवधान चाहिए।।

दीर्घकाल तक मिले शासना, दीक्षोत्सव की सदी मनाएं,
दिग्विजयी यात्रा हो तेरी, यशोगान कर तुम्हें बधाएं।
कैसे पाऊं सिद्धि सदन मैं, पथदर्शक विज्ञान चाहिए।।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

अभिनन्दन वन्दन शत बार

● 'शासनश्री' साध्वी धनश्री ●

अभिनन्दन वन्दन शत बार।
विश्वव्यापी समदर्शी, महामानव अवतार।।

तुम महासूर्य! जगत को बांटो ज्योतिर्मय ज्ञान आलोक।
तुम महामेघ! करूणा दृष्टि बरसाते जो भयाकुल लोग।
सब गुरुओं की अर्जित क्षमता, महोदधि साकार।।

तुम सिद्धपुरूष महायोगी, राग द्वेष विजता हो।
जिनशासन के शिखरपुरूष, जिणवाणी प्रचेता हो।
तुम चिदानन्द अर्हत् श्रेणी में, पाकर धन्य हुआ संसार।।

रोमांचक प्रभु की यात्राएं, काठमांडु साक्षी नेपाल।
रूके नहीं ये चरण तुम्हारे, आए कितने भी भूचाल।
सुमेरू सम नहीं रोम प्रकम्पित, बने संघ प्राकार।।

सौहार्द, स्नेह सहानुभूति का, अद्भुत सीन निहारा।
घोर विरोधी नत मस्तक, उतरा अहं का पारा।
प्रखर साधना तेरी, अनुत्तर महाश्रमण दरबार।।

अमृतोत्सव है तुम्हारा

● साध्वी शीलयशा ●

धरती अम्बर जयकारा, अमृतोत्सव है तुम्हारा,
घर-घर आनन्द बहारां, पुलकित है नयन सितारा,
ये महाश्रमण तो दिव्य उजारा है, चमकता ध्रुव तारा है।।

शिशु ने जब अवतार लिया, सबके दिल को भाया,
दुगड़ कुल में खुशिया छाई, भाग्योदय का क्षण आया।
झूमरमलजी मां नेमा ने, देव रूप बालक पाया,
संस्कारों की सौरभ से वैराग्य सुमन खिलाया।।

दो गुरुओं का मस्तक हाथ, बने हमारे शासन नाथ,
देश विदेशों के कोने-कोने में, गूंज रही तेरी आवाज।
धर्मसंघ विकसित करने, रहता श्वास-श्वास में चिन्तन,
साधु सतियों में आगम का शब्द-शब्द से करते सिंचन।।

तेरा आभामंडल, लगता सबको मन भावन,
तुम कल्पवृक्ष चिन्तामणी, आशा पूरक ज्यों सावन।
लिये अष्ट मांगलिक कर में, सजा आरती की थाली,
तिलक लगाए भव्य भाल पर, युग-युग जीयो गणमाली।।

लय : सूरज कब दूर

प्रखर तेज तेरा अभिनंदन

● साध्वी मार्दवश्री ●

प्रखर तेज तेरा अभिनंदन, सौम्य रश्मियों को है वंदन।
वाणी तेरी शीतल चंदन, मेटे भव-भव के दुख क्रंदन।।

नयनो में वात्सल्य बरसता, अनुपम जीवन सहज सरसता।
कष्टो में रहती है समता, मेटे जग की सकल विषमता।।

राग-द्वेष रहित निर्ग्रन्थ, निर्मल निर्झर तेरापंथ।
चरणों रहता सदा बसंत, मुनि मुदित जैसा हो संत।।

हे तेरापंथ संघ सरताज, पवन वेग ज्यों चरण गतिमान।
भारत, भूटान नेपाल भू पर, गुंजित है तेरापंथ महान।।

चिंतन विशद युगीन तुम्हारा, मानवता का रूप संवारा।
नैतिक मूल्यों पर दृढ़ आस्था, बहे अमन शांति की धारा।।

संयम यात्रा का सफर सुहाना, पल-पल निज चेतन को जाना।
पाया तुमने छुपा खजाना, रच दिया अभिनव अफसाना।।

कदम बढ़े जिस ओर हमारे, गतिशील रहें निज पथ हम सारे।
रहे विशुद्ध आचार संघ में, गणनायक ही सबल सहारे।।

गण में खुशियां रो आयो त्योहार

● 'शासनश्री' साध्वी मंजुप्रभा ●

गण में खुशियां रो आयो त्योंहार, स्वर्ण जयंति रो।
चिंहु दिशि में हर्ष अपार, स्वर्ण जयंति रो।।

झूमर नेमा नंदन प्यारा, गुरु तुलसी रा नयन सितारा।
श्री भैक्षव शासन सिणगार।।

गुरु रो गौरव शिखर चढ़ावै, सुयश ऋचावां कोयलियां गावे।
आनंद रा बाजै है सितार।।

धरती रो कण-कण चरणां स्यूं फरस्यो, वचणां स्यूं वीरवाणी अमृत बरस्यो
उपलब्ध्यां रो लाग्यो है अंबार।।

वीतरागता प्रभु री मनहारी, मुस्कान मिटावे दुविधा सारी।
प्रमुदित है सारो संसार।।

श्रम सिकर रा उज्जवल मोती, निष्ठा पंचक जीवन ज्योति।
चोथो आरो बरते सुखकार।।

श्रद्धा सुमनां री भेंट सजावां,डायमंड पट्टोत्सव जुबली मनावां।
अन्तर्दिल रा है म्हारां उद्गार।।

महाश्रमण को आज बधाएं

● 'शासनश्री' साध्वी यशोधरा ●

सागर फेन समुज्जवल, महाश्रमण को आज बधाएं,
अनाघ्रात आस्था सुमनों के स्वस्तिक रम्य रचाएं।
प्राणों में है नव पुलकन, मुस्काए अहो! धरा-गगन।।

उदितो दित है रूप तुम्हारा 'तुलसी' सरजनहारा।
सर्वस्व समर्पण श्री चरणों में, चमका भाग्य सितारा।
जीवन शैली है अलबेली, जागृति-पाठ पढ़ाए।।

असंदीन दीप है शासन, त्राण प्रतिष्ठा गति है।
गुरुदृष्टि ही जिनशासन में, सबसे बड़ी प्रगति है।
महाश्रमण गण गगनांगण में, नूतन चांद उगाए।।

खुली किताब है तेरा जीवन, अक्षर-अक्षर अनुपम।
समता-ममता-क्षमता का, कैसा अद्भुत है संगम।
पल-पल पग-पग स्वस्तिकमय हो, पढ़ें स्वस्ति ऋचाएं।।

लय - मांयन मांयन मुंडेर पे तेरे

गणनायक जय ज्योतिचरण

● साध्वी कार्तिकप्रभा ●

गणनायक जय ज्योतिचरण, तेरे चरणो में नमन।
गुरु महाश्रमण नमन।।

ग्यारहवें पट्टधर का, दीक्षा कल्याण महोत्सव,
जन-जन में पुलकन है गण में छाया उत्सव।
वीतराग अवतारी तेरी सन्निधि सुखकारी,
चारित्र दिया मुझको, गुरु मेरे उपकारी।
अनुत्तर साधक को अभ्यर्थना, कर चरणों में नमन।।

नेमा मां की कुक्षि से जन्म लिया तुमने,
दुगड़ कुल को भी धन्य किया तुमने।
मुनि सुमेरमल हाथों सरदार शहर दीक्षा,
तुलसी महाप्रज्ञ गुरु से पायी अनुपम शिक्षा।
अप्रमत्त साधक की अभ्यर्थना, कर चरणों में नमन।।

नयनों में अमृत है गतिशील हैं तेरे चरण,
है सौम्य शांत मुद्रा, मंगलमय तेरी शरण।
खाली झोली भरना, अनुपम तेरी करुणा,
इस भव सागर से गुरु हमको पार करना।
निश्छल साधक की अभ्यर्थना, कर चरणों में नमन।।

युगप्रधान तेरी महिमा

मेरे गुरुवर महाश्रमण की बात ही कुछ और है।
है युगप्रधान तेरी महिमा का, ओर ना कोई छोर है।

परमार्थ समर्पित जीवन है, संयम निष्ठा जिनका प्रण है।
आर्हत् वांग्मय की सौरभ को, यह महकाते चिंहुओर है।।
भिक्षु के ग्यारहवें पट्टधर, गंभीर, धीर विरले श्रुतधर।
मर्यादा, अनुशासन द्वारा, संभाली गण की डोर है।

लंबी-लंबी पदयात्रा द्वारा, चमकाया तेरापंथ तारा।
शांतिदूत की यश गाथा, आज फैल रही हर ओर है।
लाखों की किस्मत है संवारी, गुरुवर महाश्रमण उपकारी।
है कृतज्ञ हम चरणों में, गुण गाती पोर-पोर है।

– रितु दक, मंड्या

आराधना आराध्य की

हे आराध्य देव ! हे स्वमेव !
दीक्षोत्सव की शुभ बेला पर उतरे हैं धरती पर देव,

हे सरदारशहर के तपः पूत ! मां नेमा के तुम सपूत,
हे दिव्य दिवाकर ! भुवन भास्कर !
देव कुंवर सी छटा अद्भुत।

नीलांचल गगन से उतरे, मां नेमा के मन को भाए,
दूगड़ कुल के उजियारे, तुलसी गुरु महाप्रज्ञ को लुभाए।

दीक्षोत्सव की शुभ बेला पर, हर्षित है अति मन मेरा,
मोहन मुदित महाश्रमण तुम,
फैलाओ जग में उजियारा।

– उषा पटावरी, कोलकाता

युगनायक युगपुरुष तुम्हें वंदन है

● समणी सत्यप्रज्ञा ●

वंदन युगनायक युगपुरुष तुम्हें वंदन है।
युगप्रधान ज्योतिर्धर अभिवंदन है।।

जय जय ज्योतिचरण उतरे हैं धरा धाम बन महाश्रमण।
ज्ञान मयूरी पंख पसारे हृदयधाम है समवशरण।
नादयोग! ऊर्जा आलय! वंदन है।।

कंचन काया में अधिवासित शाश्वत ज्योतिर्मय संन्यास।
नर में नारायण संभावित सच कर दिखलाया विन्यास।
भगवत्ता अधिरूप, भूप! वंदन है।।

करें कामना संघ-संपदा बढे निरामय हों सरताज।
वर्धापन मंगल वेला में उत्सवमय हर दिशि है आज।
शिवसुख सम्मुख प्राण प्रणत वंदन है।।

संबोधि

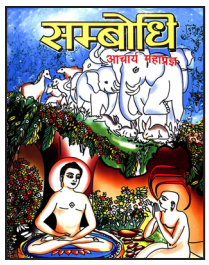

साध्य-साधन-संज्ञान

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

(२) मध्यम बुद्धि– वह कुछ परिपक्व होता है। बुद्धि गहरी तो नहीं किंतु व्यावहारिक दृष्टि में पटु होती है। वह देखता है आचार-विचार को। वह देखता है कि रीति-रिवाज, नियमों का जो ढांचा बना हुआ है, उस चौखटे में पूरा ठीक बैठता है या नहीं।

(३) तीसरा जो ज्ञानी है, जिसने सत्य का स्पर्श किया है, जाना है कि बंधन राग-द्वेष है, अध्यात्म समता है, राग-द्वेष की परिक्षीणता आत्म-रमण है, उसका परीक्षण यही होता है कि साधक कहां तक पहुंचा है? उसका आकर्षण- बिन्दु-जगत् है या आत्मा? अविद्या का बंधन टूटा है या नहीं? वह यह नहीं देखता कि लिंग, चिह्न–वेष कैसा है? आचरण कैसा है? इनका महत्त्व बाह्य दृष्टि से है, अंतर्दृष्टि से नहीं।

महावीर की दृष्टि भी अंतःस्थित है। वेष से अधिक महत्त्व है उनकी दृष्टि में समता, ज्ञान–दर्शन और चारित्र का। वेष है और ज्ञान–दर्शन नहीं है तो महावीर की दृष्टि में यह केवल आत्मघाती है। इसलिए वे कहते हैं– केश–लुंचन या सिर को मुंडा लेने से कोई श्रमण नहीं होता। श्रमण वह होता है जो सर्वदा समस्त स्थितियों में संतुलन बनाए रखता है, राग और द्वेष की तरंगें जिसे प्रकंपित नहीं करती। ब्रह्म–आत्मा में निवास करने वाला ब्राह्मण होता है। मुनि वह होता है जो सम्यग् ज्ञान में स्थित है और तापस वह है जो स्वभाव की दिशा में अग्रसर होता है। चारों के चार मार्ग भिन्न नहीं हैं। शब्द भिन्न हैं, दिशा सबकी आत्मोन्मुखी है। एक दिशा का परिवर्तन ही जीवन का परिवर्तन है। वेष–भूषा है संत की और जीवन का मुख है संसार की तरफ तो उससे वांछित सिद्धि नहीं होती।

२६. कर्मणा ब्राह्मणो लोकः कर्मणा क्षत्रियो भवेत्।
कर्मणा जायते वैश्यः, शूद्रो भवति कर्मणा ॥

ब्रह्मविद्या का कर्म करने वाला ब्राह्मण, सुरक्षा का कर्म करने वाला क्षत्रिय, व्यवसाय–कर्म करने वाला वैश्य और सेवाकर्म करने वाला शूद्र होता है।

२७. न जातिर्न च वर्णोऽभूद्, युगे युगलचारिणाम् ।
ऋषभस्य युगादेषा, व्यवस्था समजायत ।।

यौगलिक युग में न कोई जाति थी और न कोई वर्ण था। भगवान् ऋषभ के युग में जाति और वर्ण की व्यवस्था का प्रवर्तन हुआ।

२८. एकैव मानुषी जातिराचारेण विभज्यते।
जातिगर्वो महोन्मादो, जातिवादो न तात्त्विकः ॥

मनुष्य जाति एक है। उसका विभाग आचार अथवा वर्ण के आधार पर होता है। जाति का गर्व करना सबसे बड़ा उन्माद है क्योंकि जातिवाद तात्त्विक वस्तु नहीं है।

२९. जातिवर्णशरीरादि-बाह्यैर्भेदैर्विमोहितः ।
आत्माऽऽत्मसु घृणां कुर्याद्, एष मोहो महान् नृणाम् ।।

जाति, वर्ण, शरीर आदि बाह्य भेदों से विमूढ बनकर एक आत्मा दूसरी आत्मा से घृणा करे–यह मनुष्यों का महान् मोह है।

जाति व्यवहाराश्रित है और धर्म आत्माश्रित। आत्म-जगत् में प्रत्येक प्राणी समान है। वहां जातियों के विभाग इन्द्रियों के आधार पर हैं। धर्म के आधार पर व्यक्तियों का बंटवारा करना धर्म को कभी प्रिय नहीं है। धर्म के उपदेष्टा-ऋषियों ने कहा-प्रत्येक प्राणी को अपने जैसा समझो। उनकी दृष्टि में भाषा-भेद, वर्ण-भेद, धर्म-भेद, जाति-भेद आदि का महत्त्व नहीं था। जातियों की कल्पना केवल कर्म-आश्रित की गयी थी। 'मनुष्य जाति एक है' ऐसा कहकर सबमें भ्रातृत्व के बीज का वपन किया था। किन्तु मनुष्य इस इकाई सत्य को भूलकर अनेकता में विभक्त हो गया। वह जाति के मद में एक को ऊंचा और एक को नीचा देखने लगा। फलस्वरूप समाज में घृणा की भावना फैली। **(क्रमशः)**

श्रमण महावीर

आदिवासियों के बीच

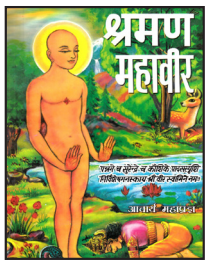

भगवान् उद्यान के मंडप में खड़े हैं। सामने एक तालाब है। कुछ लोग उसके जल को उलीच-उलीचकर बाहर फेंक रहे हैं। वह खाली हो गया है। यह नये जल के स्वागत की तैयारी हो रही है। पानी बरसने लगा। सांझ होते-होते जलधर उमड़ आया। भूमि का कण-कण जलमय हो गया। नाले तेजी से बहने लगे। देखते-देखते तालाब भर गया। भगवान् के मन में वितर्क हुआ कुछ समय पूर्व तालाब खाली था, अब वह भर गया है। वह किससे भरा है? जल से। वह किसके माध्यम से भरा है? नालों के माध्यम से। यदि नाले नहीं होते तो तालाब कैसे भरता? उनका चिंतन बाहर से भीतर की ओर मुड़ गया। उनके मन में वितर्क हुआ-मनुष्य की चेतना का सरोवर किससे भरता है? संस्कार से। वह किसके माध्यम से भरता है? विचार के माध्यम से। यदि विचार नहीं होते तो मानवीय चेतना का सरोवर कैसे भरता? वितर्क करते-करते वे इस बोध की भूमिका पर पहुंच गए यह सरोवर खाली हो सकता है, संस्कारों को उलीच-उलीचकर बाहर फेंकने से। यह सरोवर खाली हो सकता है, नालों को बन्द कर देने से।

भगवान का चिन्तन गहरे–से–गहरे में उतर रहा है। उस समय एक पर्यटक–दल उद्यान में आ पहुंचा। वह मंडप के सामने आ खड़ा हो गया। उसने भगवान् को देखा। एक व्यक्ति आगे बढ़ा, भगवान् के पास आया। उसने पूछा, 'तुम कौन हो?' भगवान् अपने चिन्तन में लीन थे। उसे कोई उत्तर नहीं मिला।

उसने फिर उदात्त स्वर में पूछा, 'तुम कौन हो?'

'मैं यह जानने की चेष्टा कर रहा हूं, मैं कौन हूं।'

'मैं पहेली की भाषा नहीं समझता। सीधी-सरल भाषा में बताओ, 'तुम कौन हो?'

'मैं भिक्षु हूं।'

'यह हमारा क्रीड़ा-स्थल है, यहां किसलिए खड़े हो ?'

'जिसके लिए मैं भिक्षु बना हूं, उसी के लिए खड़ा हूं।'

'यह स्थान तुम्हें किसने दिया है?'

'यह किसी का नहीं है, इसलिए सबके द्वारा प्रदत्त है।'

'अच्छा, तुम भिक्षु हो तो हमें धर्म सुनाओ।'

'अभी मैं सत्य की खोज कर रहा हूं।'

'चलो, किसी काम का नहीं है यह भिक्षु।'– इस आक्रोश के साथ पर्यटक-दल आगे बढ़ गया।

सूर्य पश्चिम के अंचल में चला गया। रात फिर आ गई। अंधकार सघन हो गया। उस समय एक युगल आया। बाहर से आवाज दी, 'भीतर कौन है?' कोई उत्तर नहीं मिला। तीसरी बार फिर वही आवाज और भीतर से वही मौन। वह युगल भीतर गया। उसे मंडप के कोने में एक अस्पष्ट-सी छाया दिखाई दी। उसने निकट पहुंचकर देखा, कोई आदमी खड़ा है। वह क्रोधावेश से भर गया, 'भले आदमी! तीन बार पुकारा, फिर भी नहीं बोलते हो।' उसने असंख्य गालियां दीं और वह चला गया।' भगवान् ने सोचा, 'दूसरे के स्थान में जाकर रहना अप्रिय हो, यह आश्चर्य नहीं है। आश्चर्य यह है कि शून्य-स्थान में रहना भी अप्रिय हो जाता है। कटु वचन बोलना अप्रिय हो, यह अद्भुत नहीं है। अद्भुत यह है कि मौन रहना भी अप्रिय हो जाता है।'

'मुझे दूसरों के मन में अप्रीति उपजाने का निमित्त क्यों बनना चाहिए? यह जन-संकुल क्षेत्र है। मैं कहीं भी चला जाऊं, लोग आ पहुंचते हैं। कुछ लोग जिज्ञासा लिये आते हैं। मैं कम बोलता हूं, उससे वे चिढ़ जाते हैं। कुछ लोग एकान्त की खोज में आते हैं। मेरी उपस्थिति में उन्हें एकांत नहीं मिलता, इसलिए वे क्रुद्ध हो जाते हैं। कुछ लोग कुतूहलवश आते हैं। वे कोलाहल कर विक्षेप करते हैं। जब मैं अनिमेष दृष्टि से ध्यान करता हूं, तब स्थिर, विस्फारित नेत्रों को देखकर बच्चे डर जाते हैं। इस स्थिति में क्या यह अच्छा नहीं होगा कि मैं आदिवासी क्षेत्रों में चला जाऊं। वहां लोग बहुत कम हैं। वहां गांव बहुत कम हैं। पहाड़ ही पहाड़ हैं और जंगल ही जंगल। वहां न में किसी के लिए बाधा बनूंगा और न कोई दूसरा मेरे लिए बाधा बनेगा।' **(क्रमशः)**

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

अन्तर्मुखी बनने का प्रयोग

दशवैकालिक सूत्र की चूलिका में कहा गया है-

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेणं।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा, आइन्नओ खिप्पमिवक्खलीणं ।।

जहां कहीं भी मन, वचन और काया को दुष्प्रवृत्त होता हुआ देखे तो धीर साधु वहीं संभल जाए जैसे जातिमान् अश्व लगाम को खींचते ही संभल जाता है।

इस गाथा में दुष्प्रवृत्ति में संलग्न होते हुए मन, वचन और शरीर को वहां से हटाने का निर्देश किया गया है। यह बहिर्मुखता से अन्तर्मुखता की ओर प्रस्थान का अभ्यास है। सलक्ष्य इसका अभ्यास करने से आध्यात्मिक व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है। मोहनीय कर्म के उदय के कारण मन, वचन और काय सदोष होते रहते हैं। यह मोहोदय का प्रभाव है। जितना क्षयोपशम भाव प्रबल होगा, उसका प्रयोग होगा, मोहनीय का उदयभाव निर्बल होता चला जाएगा।

अन्तर्मुखी बनने के इस प्रयोग को आगमों में 'प्रतिसंलीनता' संज्ञा से अभिहित किया गया है। वहां निर्जरा के बारह भेदों में इसे छठा स्थान प्राप्त है। तत्त्वार्थ सूत्र में प्रतिसंलीनता के स्थान पर 'विविक्तशय्यासन' शब्द मिलता है। वहां इसका पांचवां स्थान और कायक्लेश का छठा स्थान रखा गया है।

आगमों के अनुसार विविक्तशय्यासन प्रतिसंलीनता का एक प्रकार है, उसके बारह प्रकार और भी हैं-

परिभाषा

जैन सिद्धान्त दीपिका में प्रतिसंलीनता की परिभाषा इस प्रकार बतलाई गई है-

"**इन्द्रियादीनां बाह्यविषयेभ्यः प्रतिसंहरणं प्रतिसलीनता**"।

इन्द्रियों एवं मन आदि का बाह्य विषयों से प्रतिसंहरण करना, वहां से हटा लेना प्रतिसंलीनता है।

इसका तात्पर्यार्थ है गोपन करना, अशुभ प्रवृत्ति का निरोध और शुभ प्रवृत्ति में संलग्नता, एकाग्रता का प्रयोग।

भेद-प्रभेद

प्रतिसंलीनता के मुख्य चार प्रकार हैं- १. इन्द्रिय-प्रतिसंलीनता २. कषाय-प्रतिसंलीनता ३. योग-प्रतिसंलीनता ४. विविक्त शयनासन-सेवन। उत्तरभेद करने पर प्रतिसंलीनता तेरह प्रकार की हो जाती है। वे इस प्रकार हैं-

१. श्रोत्रेन्द्रिय विषय-प्रचार निरोध अथवा श्रोत्रेन्द्रिय विषयप्राप्त अर्थों में रागद्वेष-विनिग्रह।

२. चक्षुरिन्द्रिय विषय-प्रचार निरोध अथवा चक्षुरिन्द्रिय विषयप्राप्त अर्थों में रागद्वेष-विनिग्रह।

३. घ्राणेन्द्रिय विषय-प्रचार निरोध अथवा घ्राणेन्द्रिय विषयप्राप्त अर्थों में रागद्वेष-विनिग्रह।

४. रसनेन्द्रिय विषय-प्रचार निरोध अथवा रसनेन्द्रिय विषयप्राप्त अर्थों में रागद्वेष-विनिग्रह।

५. स्पर्शनेन्द्रिय विषय-प्रचार निरोध अथवा स्पर्शनेन्द्रिय विषयप्राप्त अर्थों में रागद्वेष-विनिग्रह।

उपरिनिर्दिष्ट पांच प्रकार इन्द्रिय-प्रतिसंलीनता के हैं। यह इन्द्रिय विजय की साधना अन्तर्मुखी बनने के लिए अनिवार्य है। उसका अभ्यास करने के दो प्रयोग निर्दिष्ट हैं। पहला प्रयोग है- इन्द्रियों की प्रवृत्ति को रोक देना, जैसे न सुनना, न देखना, न सूंघना, न खाना-पीना और न स्पर्श करना। इस प्रकार बार-बार इन्द्रिय-निरोध करना। दूसरा प्रयोग है रागद्वेष-विनिग्रह। इसमें इन्द्रियों की प्रवृत्ति का निरोध नहीं किया जाता, किन्तु ज्ञाता-द्रष्टा भाव का अभ्यास किया जाता है। साधक केवल सुनता है, केवल देखता है, रागद्वेष अथवा प्रियता-अप्रियता के भाव से मुक्त रहता है। आयार चूला में निर्दिष्ट है-

ण सक्का ण सोउं सद्दा सोयविसयमागया।
रागदोसा उ जे तत्थ ते भिक्खू परिवज्जए।।

कान में पड़ने वाले शब्दों को न सुनना शक्य नहीं है, किन्तु उनमें राग-द्वेष का परिवर्जन किया जाए। इसी प्रकार शेष इन्द्रियों के बारे में यथायोग्य ज्ञातव्य है।

कषाय-प्रतीसंलीनता

६. क्रोधोदय-निरोध अथवा उदयप्राप्त क्रोध का विफलीकरण।

७. मान-उदय-निरोध अथवा मान का विफलीकरण।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री पुंजलालजी (उज्जैन) दीक्षा क्रमांक : 88

मुनिश्री बड़े तपस्वी और आत्मार्थी थे। आपने उपवास, बेले, तेले, चोले तो अनेकों बार किये। पंचोले से 22 तक लड़ी (क्रमबद्ध) की। ऊपर में आपने 30, 32, 33 की तपस्या की। आपने शीतकाल में बहुत वर्षो तक शीत सहन किया।

- साभार: शासन समुद्र -

जून 2024 सप्ताह के विशेष दिन

04 जून
भगवान शांतिनाथ जन्म एवं निर्वाण कल्याणक

05 जून
भगवान शांतिनाथ दीक्षा कल्याणक

06 जून
पक्खी

11 जून
भगवान धर्मनाथ निर्वाण कल्याणक

15 जून
भगवान वासुपूज्य च्यवन कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस पर चारित्रात्माओं के उद्गार

मलाड़, मुंबई

परम प्रतापी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 15वें महाप्रयाण दिवस का कार्यक्रम मलाड़ तेरापंथ भवन में साध्वी शकुन्तला कुमारी जी व डॉ० साध्वी पीयूषप्रभाजी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्रोच्चार व 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः' के जप द्वारा किया गया। रेखा व वंदना जैन ने मंगल स्तुति की । तेयुप अध्यक्ष पेलेस मेहता, सभा अध्यक्ष इन्द्रमल जैन, मंत्री हस्ति भंडारी, तोलाराम जैन, तेयुप मंत्री विनोद सोलंकी, महिला मंडल मंत्री मीना बाफणा, क्षेत्रपाल मंदिर के मांगीलाल लोढ़ा, युक्ति, ध्यानी एवं प्रेमलता जैन व महिला मंडल ने गीत के माध्यम से श्रद्धांजलि दी। साध्वी जागृतप्रभाजी ने कविता, साध्वी सुधाकुमारीजी ने गीत एवं साध्वी भावनाश्रीजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी संचितयशाजी, साध्वी दीप्तियशाजी, साध्वी रक्षितयशाजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के व्यक्तित्व व कर्तृत्व का रोचक विवरण प्रस्तुत किया।

डॉ० साध्वी पीयूषप्रभाजी ने कहा - आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी उच्च कोटि के चिंतक और मनीषी ही नहीं, वे श्रेष्ठ साहित्यकार और कवि भी थे। उनके साहित्य में समसामयिक समस्याओं का समाधान मिलता है। आपने कहा - उनका काव्य साहित्य आकर्षक है। महावीर और मेघ का संवाद जीवन और दर्शन की कई गुत्थियों को सुलझाने वाला है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को महाप्रज्ञ साहित्य पढ़ना चाहिए। साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी ने कहा- आचार्य महाप्रज्ञजी मणिधारी मां बालूजी के पुत्र थे। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने उन्हें अज्ञ से महाप्रज्ञ बनाने में पुरुषार्थ किया। अनेक रोचक संस्मरणों का श्रवण कराते हुए साध्वीश्री ने कहा- आचार्य महाप्रज्ञ जी समर्पण व संकल्प शक्ति से महायोगी, महान दार्शनिक, विशिष्ट संत व तेरापंथ धर्मसंघ के महान, तेजस्वी आचार्य बने।

मदुरै

मुनि रश्मिकुमार जी एवं सहवर्ती मुनि प्रियांशु कुमार जी के पावन सान्निध्य में प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 15वां महाप्रयाण दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुनि रश्मिकुमार जी ने नमस्कार महामंत्र एवं जप का प्रयोग प्रारम्भ में कराया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक जीरावला ने सभी का स्वागत किया। तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने गीतिका की प्रस्तुति दी। तनिष्क कोठारी ने गुरुदेव आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का संक्षिप्त में परिचय दिया। मुनि रश्मिकुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ के 10वें आचार्य परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ जी अपने गुरु तुलसी के विनित शिष्य थे। गुरु की कृपा दृष्टि से आप कंकर से शंकर बने, तेरापंथ के सरताज बने। आप महान लेखक, कवि, रचनाकार, एवं संस्कृत भाषा के महान पंडित कहलाते थे। आप ने लगभग 300 पुस्तकों का लेखन किया।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी को अपने भावों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ओम् एवं अष्ट मंगल का महत्व बताया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक जीरावला ने किया। अंत मे तेरापंथ सभा के सहमंत्री जितेंद्र सुराणा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

शाहीबाग, अहमदाबाद

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की 15वीं पुण्यतिथि शाहीबाग, अहमदाबाद में मुनि मुनिसुव्रतकुमार जी आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में सैकड़ों श्रावक- श्राविकाओं की उपस्थिति में बड़ी श्रद्धा व हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के महामंत्रोच्चार से हुआ। मुनिश्री ने कहा कि करोड़ों में कोई विरले ही होते हैं जो महाप्रज्ञ बन पाते हैं। वे आचार्य कालूगणी व आचार्य तुलसी की करुणा व अनुशासन की छैनी से तराशे गए ऐसे महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हुए जिनकी तुलना विवेकानन्द से की जाती है। उनके जीवन से हमें अनेकानेक शिक्षाएं मिलती हैं। यदि एक भी शिक्षा हमारे जीवन में आ जाए तो जीवन धन्य हो जाए। मुनि आकाश कुमारजी ने भीतर की सुप्त चेतना को जगाकर महाप्रज्ञ बनने की प्रेरणा दी। जिस प्रकार वे नत्थु से महाप्रज्ञ बन गए, अज्ञ से विज्ञ बन गए, हम भी पुरुषार्थ कर जीवन का अच्छा निर्माण कर सकते हैं। सभा अध्यक्ष कांतिलाल संकलेचा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पृष्ठ 1 का शेष

श्रद्धा होने के...

गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी दो गुरु और मेरे दीक्षा प्रदाता मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं' थे। उनके साथ मुनि सोहनलालजी व मुनि रोशनलालजी भी थे। उन सभी को मैं आज याद करता हूं। उनकी आत्माएं जहां भी हैं, हमें प्रेरणा दे सकें तो देते रहें। मैं अपनी साधना में आगे बढ़ने का प्रयास करता रहूं। आज ओमजी बिरला और राव साहब का आना हुआ है। ये भी खूब आध्यात्मिक सेवा करते रहें।

बख्शीष और प्रेरणा –

पचास वर्ष सम्पन्नता का अवसर है। हमारे धर्म संघ के साधु-साध्वियां इसके प्रतीक के रूप में मूल विगयों की बख्शीष दी जा रही है। इसके अलावा कोई एक आगम पढ़ने का प्रयास करें। भगवती या उत्तराध्ययन का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी जा रही है।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने कहा कि कुछ आचार्य काव्य में तो कुछ प्रवचन में कुशल होते हैं, कुछ न्याय विशारद होते हैं, कुछ सैद्धांतिक होते हैं लेकिन चारित्र की कला में कुशल विरले आचार्य होते हैं, उनमें एक नाम है- आचार्यश्री महाश्रमणजी का। आपने आज के दिन चारित्र रत्न को स्वीकार किया था और कुछ व्रतों को ग्रहण किया था। आपका संन्यास तेजस्वी बन रहा है क्योंकि आप व्रत की चेतना में विश्वास करते हैं। 50 वर्षों से आप छोटे-छोटे तप की अखंड आराधना कर रहे हैं। आपका संन्यास तेजस्वी बन रहा है क्योंकि आपका मन, वचन और कर्म पवित्र है। व्रत और संयम की चेतना आपको अध्यात्म पथ पर प्रतिष्ठित कर रही है। आचार्य श्री तुलसी ने आपको 'महाश्रमण' पद पर, आचार्य महाप्रज्ञ जी ने आपको 'युवाचार्य' के पद पर प्रतिष्ठित किया। शासनमाता ने आपको 'युगप्रधान' के पद पर स्थापित किया। आपने प्रलंब यात्राएं की, आप केवल तेरापंथ के आचार्य नहीं इंसानियत के आचार्य हैं।

आज के दिन आपने मुझे दायित्व दिया था, आपश्री से इतनी प्रार्थना करती हूँ आप मुझे ऐसी आध्यात्मिक ऊर्जा दें जिससे मैं इस दायित्व का सम्यक्तया निर्वहन कर सकूँ। साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने साध्वी समाज की ओर से आचार्यप्रवर को रजोहरण, प्रमार्जनी और एलवान समर्पित किया।

कार्यक्रम का सञ्चालन करते हुए मुख्य मुनि श्री ने कहा कि पूज्यप्रवर के दीक्षा के स्वर्ण जयंती को कल्याण वर्ष के रूप में मनाया गया। आज के दिन पूज्यवर ने स्व-पर कल्याण के लिए प्रस्थान किया था। आचार्य श्री महाश्रमण 600 मास दीक्षा पर्याय का जागरूकता से पालन करने वाले, अमल अन्तः करण, उपशांत कषाय और वीतराग कल्प चेतना के धारक हैं। सूयगड़ो के अनुसार कोई वीतराग बन जाए उसकी तो बात ही निराली है लेकिन जो सकषायी होते हुए भी उनका निग्रह करता है वह वीतराग तुल्य होता है। इसलिए पूरा धर्मसंघ आपको वीतराग कल्प आचार्य के रूप में देख रहा है। परम पूज्य आचार्य प्रवर के दीक्षा कल्याण वर्ष में अनेकों चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं ने 51 संकल्पों को स्वीकार किया, समापन के छः दिवसों में भी अनेकों लोगों ने संकल्प स्वीकार किये। इस वर्ष में सघन साधना शिविर, महाश्रमण कीर्तिगाथा, वीतराग पथ कार्यशाला जैसे अनेकों कार्यक्रम समायोजित किये गए।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने कहा कि स्थानांग सूत्र में पराक्रम के आधार पर व्यक्तित्व के चार प्रकार बताए गए हैं - शान्तिशूर, तपःशूर, दानशूर और युद्धशूर। जिस व्यक्ति की सहिष्णुता की साधना विशिष्टतम होती है वह शांतिशूर कहलाता है। आचार्य श्री की सहिष्णुता साधना अनुत्तर है, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने आपकी विशिष्टतम साधना को देखते हुए आपको महातपस्वी सम्बोधन से सम्बोधित किया, आपसे मिलने वाले समय दान, स्नेह दान और ज्ञान दान से जन-जन आपसे अभिभूत हैं, क्रोध-मान-माया-लोभ रुपी चारों शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का आपका पराक्रम अनुत्तर है अतः मैं आपकी शान्तिशूर, तपःशूर, दानशूर और युद्धशूर के रूप में अभ्यर्थना करती हूँ। आप जो संकल्प करते हैं उसे निष्ठा के साथ पूर्णता तक ले जाते हैं इसलिए आप संकल्प शूर भी हैं। 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव के अवसर पर आचार्यप्रवर ने घोषणा करवाई की मुमुक्षु संख्या प्रवर्धमान हो, अब तक लगभग 25 बहनों एवं 9 भाइयों ने संस्था में प्रवेश प्राप्त किया है।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के तृतीय चयन दिवस पर साध्वी एवं समणी समाज की ओर से यह मंगलकामना करती हूँ आप चिरायु हो और निरामय रहते हुए हम सबकी सार-संभाल करती रहें।

राज्य मंत्री राव साहब दानवे ने पूज्य प्रवर की अभ्यर्थना करते हुए कहा कि मैं आचार्य श्री से एक आशीर्वाद चाहता हूँ कि आप अगले वर्ष फिर से यहाँ आएं और मुझे और बिरला जी को मोदी जी की मंत्री परिषद् के सदस्य के रूप में फिर से यहां बुलाएं। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि आज हम युगपुरूष, महान तपस्वी, सिद्धयोगी के दीक्षा कल्याण महोत्सव समारोह में आये हैं।

कार्यक्रम के शुभारम्भ में ज्ञानशाला के 50 ज्ञानार्थियों ने वैरागी वेश में पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी प्रस्तुति दी। मुनिवृंद, साध्वी वृंद एवं समणी वृन्द ने पृथक-पृथक गीत से पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में सुमधुर गीतों की प्रस्तुति दी। समण श्रेणी की ओर से तैयार वर्धापना पत्र साध्वीवर्या जी के माध्यम से मुख्य मुनि प्रवर द्वारा पूज्य प्रवर को समर्पित किया गया।

युवा दिवस के उपलक्ष में अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए आचार्यप्रवर के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष के अंतर्गत परिषदों के माध्यम से किये गए कार्यों की झलक प्रस्तुत की। अभातेयुप प्रबंध मंडल एवं सदस्यों ने पूज्य प्रवर की अभिवंदना में गीत की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर अभातेयुप महामंत्री अमित नाहटा, पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने शब्द चित्र की प्रस्तुति दी। आचार्य प्रवर ने अभातेयुप सदस्यों एवं जनता को पारिवारिक सदस्यों की दीक्षा में बाधक नहीं बनने का संकल्प करवाया। आचार्य प्रवर के संसार पक्षीय दुगड़ परिवार की ओर से एक डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से 50 वर्ष पूर्व के आचार्य श्री महाश्रमणजी के दीक्षा प्रसंग का मंत्र मुग्ध करने वाला दृश्य प्रस्तुत किया गया। आचार्य प्रवर के संसारपक्षीय ज्येष्ठ भ्राता सुजानमल जी दुगड़ ने आज्ञा पत्र की प्रतिलिपि पूज्य प्रवर को अर्पित की। दुगड़ परिवार ने गीत के माध्यम से आचार्यश्री की अभ्यर्थना की।

साध्वी प्रमुखा श्री, मुख्य मुनि श्री एवं साध्वी वर्या श्री के माध्यम से 'संवाद भगवान से' कार्यक्रम की अनुपम प्रस्तुति हुई। अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स, युवादृष्टि, जैन भारती एवं अन्य कई प्रकाशनों द्वारा प्रकाशित आचार्य महाश्रमण दीक्षा कल्याण विशेषांक पूज्यप्रवर को समर्पित किये गये। व्यवस्था समिति अध्यक्ष सचिन पीपड़ा ने स्वागत भाषण दिया। महासभा के मुख्य प्रबंध न्यासी महेन्द्र नाहटा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए सेवा साधक श्रेणी के शुभारम्भ की घोषणा की। कार्यक्रम के प्रथम सत्र का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने एवं द्वितीय सत्र का सञ्चालन मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने किया।

अक्षय तृतीया दिवस पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

राजलदेसर

'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया महोत्सव आयोजित किया गया। साध्वीश्री ने तप अनुमोदना करते हुए कहा - भगवान ऋषभ ने लगभग 13 महीनों की तपस्या की। प्रपौत्र श्रेयांश ने इक्षुरस का सुपात्र दान देकर ऋषभ भगवान का पारणा करवाया। अक्षय तृतीया का यह पर्व हमें सुपात्र दान देने की प्रेरणा देता है जिसे देकर हम भव परंपरा से मुक्त हो सकते हैं। अजर-अमर बन सकते हैं। वर्षीतप करना बहुत कठिन है। इंद्रिय संयम के साथ-साथ अनासक्ति चेतना का विकास होता है। वर्षीतप की अनुमोदना करते हुए साध्वीश्री जी ने श्रावक-श्राविकाओं को वर्षीतप करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों ने 'तीज बन गई अक्षय' कार्यक्रम की रोचक प्रस्तुति दी। साध्वी कमलयशाजी एवं साध्वी चैत्यप्रभा जी ने तप अनुमोदन पर विचार रखते हुए सुमधुर गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विमल सिंह दुधेड़िया, मंत्री कमल दुगड़, तेयुप अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल एवं महिला मंडल ने गीत व वक्तव्य के माध्यम से वर्षीतप आराधिकाओं का अभिनंदन किया। तेरापंथ सभा, महिला मंडल तथा युवक परिषद् ने वर्षीतप करने वाली बहनों सुंदर देवी दुधेड़िया एवं राजू देवी संचेती को प्रशस्ति पत्र व प्रतीक चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी स्नेहप्रभा जी द्वारा मंगलाचरण से हुआ। साध्वी इंदूयशा जी ने कार्यक्रम का कुशल संयोजन किया। कार्यक्रम में श्रावक - श्राविकाओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। 'तीज बन गई अक्षय' कार्यक्रम में प्रस्तुति देने वाले सभी कलाकारों का विमला देवी घोषल धर्म पत्नी स्व. गुलाबचंद घोषल परिवार द्वारा पुरस्कृत कर उत्साहवर्धन किया गया।

श्रीडूंगरगढ़

जैन धर्म में अक्षय तृतीया का संबंध भगवान ऋषभ से जुड़ा हुआ है। वैशाख शुक्ला 3 को भगवान ऋषभ ने इक्षु से पारणा किया था, उनकी स्मृति में यह पर्व मनाया जाता है। ऋषभ असि, मसि, कृषि व ऋषि परम्परा के सूत्रधार थे। मानवीय संस्कृति व सभ्यता के विकास के पुरोधा थे, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक आदि सभी व्यवस्था के सृजक थे। ऋषभ प्रथम मुनि बने, एक वर्ष से भी अधिक समय तक विचरण करते-करते हस्तिनापुर पधारे। राजकुमार श्रेयांस के हाथों से वर्षीतप का पारणा किया। वह दान, दाता और वह तप अक्षय बन गया। उपरोक्त विचार मालू भवन में सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी ने अक्षय तृतीया के पावन पर्व के अवसर पर व्यक्त किये। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी सुमंगलाश्रीजी के मंगलाचरण से हुई। सभाध्यक्ष विजयराज सेठिया, महिला मंडल से मंजू झाबक, तेयुप अध्यक्ष मनीष नौलखा ने अपने विचार व्यक्त किए। सेवाकेन्द्र की साध्वियों व महिला मंडल ने गीतिका के द्वारा वर्षीतप के तप की अनुमोदना की। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भगवान ऋषभदेव के पारणे की सुन्दर प्रस्तुति दी गयी। कार्यक्रम का सफल संचालन साध्वी सुमंगलाश्रीजी ने किया। स्थानीय संस्थाओं द्वारा कलकत्ता से आई हुई तपस्विनी बहन राजूदेवी का सम्मान किया गया।

जसोल

सिवांची मालाणी तेरापंथ संस्थान भवन में आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती 'शासनश्री' मुनि हर्षलाल जी, मुनि यशवंतकुमारजी एवं मुनि मोक्षकुमार जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 85 तपस्वी भाई बहनों में 67 उपवास व 18 एकासन के वर्षीतप शामिल थे। सर्वप्रथम मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। कन्या मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। मुनि हर्षलाल जी ने कहा कि भगवान ऋषभ ने कर्म युग का प्रवर्तन किया, असि, मसि और कृषि की शिक्षा दी उसके बाद राजा ऋषभ ने धर्मयुग के प्रवर्तन के लिए संन्यास जीवन को अंगीकार कर लिया। संन्यास लेने के बाद एक वर्ष तक उनको आहार पानी नहीं मिला, वैशाख शुक्ला तीज के दिन भगवान को राजकुमार श्रेयांस द्वारा इक्षु रस के रूप में आहार दान प्राप्त हुआ। उसी दिन को हम आज अक्षय तृतीया के रूप में मना रहे हैं। मुनि यशवंतकुमारजी ने कहा कर्म किसी को भी नहीं छोड़ता है, अनंत शक्ति के धारक भगवान भी इससे अछूते नहीं रहते हैं। मुनि मोक्षकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में सिवांची मालाणी संस्थान अध्यक्ष डूंगरचन्द सालेचा ने विचार व्यक्त करते हुए तपस्वी भाई बहनों का स्वागत अभिनंदन किया। मुमूक्षु दीप्ति वेदमुथा व मुमूक्षु शेफाली चोपड़ा ने अपने विचार रखे। तेरापंथ महासभा सदस्य गौतमचंद सालेचा, पचपदरा विधायक अरुण चौधरी एवं नगर परिषद चेयरमैन सुमित्रादेवी जैन ने अपने विचार रखते हुए सभी तपस्वियों के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त की। महिला मंडल एवं तेयुप द्वारा सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति दी गई। प्रकाश श्रीश्रीमाल, सालेचा परिवार, कावेरी ग्रुप की ओर से गीत की प्रस्तुति दी गयी। कार्यक्रम के प्रायोजक मूलचंद गौतमचंद डूंगरचंद सालेचा परिवार जसोल द्वारा सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में सिवांची मालानी क्षेत्र की विभिन्न सभाओं के अध्यक्ष, मंत्री, पदाधिकारी व सदस्यों के साथ ही सैकड़ों श्रावक-श्राविका उपस्थित हुए। भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित बालोतरा के विजय राघव गोयल का संस्थान की ओर से सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल, संस्थान टीम व सदस्यों का पूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के मंत्री ललित श्रीश्रीमाल ने किया।

शांति निकेतन, गंगाशहर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गंगाशहर द्वारा साध्वी ललितकलाजी, साध्वी चरितार्थप्रभाजी व साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया एवं वर्षीतप अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए साध्वी ललितकलाजी ने कहा कि भगवान ऋषभ ने निरंतर तपस्या करते हुए वर्षीतप किया, वर्तमान काल को देखते हुए एकांतर उपवास कर यह तप किया जाता है। साधु-साध्वियों तथा तपस्वियों को देखकर तपस्या की भावना होती है। साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने तप की अनुमोदना करते हुए कहा कि वर्षीतप व्यक्ति को भीतर से जगाने का प्रयास है। तपस्या व्यक्ति के स्वस्थ रहने का राज है। उन्होंने साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी से प्राप्त संदेश का वाचन भी किया। साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने भगवान ऋषभ के जीवन की विशेषताएं बताते हुए कहा कि जो व्यक्ति श्रम व तप कर सत्य का अनुसंधान करते हैं, वे स्व जीवन के कल्याण के साथ-साथ सबका हित करते हैं। भगवान ऋषभ ऐसे ही महापुरुष थे, जिनका जन्म जन कल्याण के लिए हुआ। उन्होंने लोगों को सामाजिक जीवन के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रबंधन के गुर दिए। आज ही के दिन उन्होंने प्रपौत्र श्रेयांश कुमार के हाथों से ईक्षु रस से पारणा किया था। साध्वी विवेकश्रीजी, साध्वी कंचनरेखाजी, साध्वी ध्रुवरेखाजी, साध्वी मध्यस्थप्रभाजी व साध्वी सहजप्रभाजी ने भी जनता को संबोधित किया। साध्वीवृंद द्वारा नाटिका व गीतिका के माध्यम से भगवान ऋषभ के अवदान प्रस्तुत किये गए। कार्यक्रम का शुभारंभ कोमल पुगलिया द्वारा मंगलाचरण के गायन से हुआ। महिला मंडल व चोपड़ा परिवार द्वारा तप अनुमोदन में गीतिका प्रस्तुत की गई। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, महिला मंडल अध्यक्षा संजू लालानी, युवक परिषद अध्यक्ष अरुण नाहटा, दिव्या जैन, प्रमिला खटेड़, रेखा खटेड़, वैभव सेठिया, भव्या बोथरा, रितु चोपड़ा, करणीदान रांका ने तप अनुमोदना में अपनी अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन करते हुए तेरापंथी सभा के मंत्री रतनलाल छल्लाणी ने बताया कि गंगाशहर में साधु- साध्वी, श्रावक-श्राविका चारों ही तीर्थ में वर्षीतप हुए हैं।

मदुरै

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में मुनि रश्मिकुमार जी एवं मुनि प्रियांशुकुमार जी के पावन सान्निध्य में अक्षय तृतीया महोत्सव वर्षीतप पारणा का कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रारंभ में मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र एवं 'ॐ ऋषभाय नमः' का जाप कराया। तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक कुमार जीरावला ने स्वागत भाषण देते हुए आगुंतुकों का स्वागत किया। मुनि रश्मिकुमार जी ने सभा को संबोधित करते हुए अक्षय तृतीया पर विशेष प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान का सभी धर्मों में आदर के साथ नाम लिया जाता है, एवं कई पुराणों में भगवान ऋषभ का नाम श्रद्धा के साथ मिलता है। कार्यक्रम का संचालन मुनि प्रियांशुकुमार जी ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन सभा के मंत्री अभिनंदन बागरेचा ने किया।

विराटनगर, नेपाल

साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया महोत्सव का आयोजन किया गया। मधु कोचर, कुसुम मालू ने वर्षीतप की साधना से भगवान ऋषभ को तप का अर्घ्य चढ़ाया। साध्वीश्री ने तपस्वियों एवं श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि- जैन धर्म के उन्नायक भगवान ऋषभ ने जैन संस्कृति को त्याग एवं तप से सींचा। सौ वरदानों में प्रथम वरदान तपस्या को माना गया। जैसे - सूर्य के पीछे प्रकाश, बादल के पीछे विद्युत स्फुरण, जल के पीछे शीतलता आती है वैसे ही तपस्या के साथ सर्वगुण समूह चले आते हैं। शरीर में जो स्थान प्राण का है वही धर्म में तपस्या का है। आज के दिन भगवान ऋषभ ने बारह महीने की तपस्या का पारणा किया था उसी की स्मृति स्वरूप आज भी अक्षय तृतीया का पावन दिन 'पारणा महोत्सव' के रूप में मनाया जाता है। सभी धर्मों में अक्षय तृतीया का महत्व किसी न किसी रूप से जुड़ा हुआ है। कार्यक्रम में साध्वी वृंद ने 'ऋषभ पोस्ट ऑफिस' की प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने राजकुमार श्रेयांस द्वारा पारणे का दृश्य दिखाया। युवती मंडल ने 'ऋषभ एकः रूप अनेक' कार्यक्रम प्रस्तुत किया। स्थानीय युवक परिषद, ज्ञानशाला ने गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय सभा अध्यक्ष सतीश दुगड़, निशा लालवानी, सोनी कोचर, फतेचन्द कोचर, नेहा मालू ने अपनी भावना गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से राखी। कार्यक्रम संचालन स्थानीय सभा मंत्री सुरेन्द्र नौलखा ने किया।

कुम्बकोणम / चेन्नई

तमिलनाडु के कुम्बकोणम नगर में मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया महोत्सव का आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में किया गया। निर्मला श्रीश्रीमाल, पुष्पा श्रीश्रीमाल एवं वंसताबाई मेहता के वर्षीतप तपस्या का अभिनन्दन समारोह आयोजित हुआ। मुनि दीपकुमार जी ने कहा कि अक्षय तृतीया का पवित्र दिन इस युग के भिक्षा विधि के प्रारम्भ का दिन है। आज के दिन भगवान ऋषभदेव के एक वर्ष से ऊपर की तपस्या का पारणा हुआ था। भगवान ऋषभ का तप अनुपमेय था। भगवान ऋषभ इस युग के प्रथम राजा कहलाए, प्रथम मुनि बने, प्रथम भिक्षुक कहलाए और प्रथम तीर्थकर बने। भगवान ऋषभ ने समाज के लिए भी अपना समय लगाया, लोगों को असि, मषि, कृषि का प्रशिक्षण दिया और बाद में साधना में लीन बने। मुनिश्री ने आगे कहा वर्तमान में भगवान ऋषभ की तपस्या को लक्ष्य में रखकर हजारों-हजारों श्रावक-श्राविकाएं वर्षीतप की साधना करते हैं। मुनिश्री ने उपस्थित वर्षीतप साधिकाओं के तप की अनुमोदना करते हुए इस मार्ग पर निरन्तर, निर्बाध रूप से आगे बढ़ने की मंगलकामना की। मुनिश्री काव्यकुमार ने संचालन करते हुए कहा कि अक्षय तृतीया का पर्व त्याग-तपस्या की प्रेरणा देने वाला दिवस हैं। प्रभु ऋषभ एक अलौकिक और विलक्षण पुरुष थे। तेरापंथ सभाध्यक्ष विशाल सेठिया ने आभार व्यक्त किया।

संक्षिप्त खबर

पौध को सींचें कार्यशाला का हुआ आयोजन

टिटिलागढ़। टिटिलागढ़ तेरापंथ महिला मंडल द्वारा समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी एवं समणी क्षान्तिप्रज्ञाजी के सान्निध्य में गुड पेरेंटिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया। महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। महिला मंडल की अध्यक्षा बबीता जैन ने सभी का स्वागत किया। समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी ने गुड पेरेंटिंग को समझाते हुए अपनी बात रखी। समणी जी ने कहा कि बच्चे अपने माता-पिता को देखकर सबसे ज्यादा सीखते हैं। इसलिए गुड पेरेंटिंग के लिए माता-पिता को अपनी लाइफ स्टाइल चेंज कर लेनी चाहिए। हर मां-बाप अपने बच्चों को अच्छा से अच्छा बनाना चाहता है। फिर भी कहीं न कहीं कुछ कमी है।

वर्तमान में माता-पिता बच्चों के ऊपर बहुत ज्यादा प्रेशर डालते हैं। माता-पिता बच्चों पर अपनी ख्वाहिशें थोपते हैं। यह मासूम जिंदगी के साथ खिलवाड़ है। बच्चों में 12 ,13 वर्ष तक थाइमस ग्रंथि एक्टिव रहती है जो कि बच्चों के विकास के लिए बहुत उपयोगी रहती है। बच्चे हाइपर हो जाते हैं तो ग्रंथि निष्क्रिय हो जाती है।

समणी जी ने कई टिप्स के माध्यम से गुड पेरेंटिंग को समझाया। समणी जी ने कहा बच्चों को कभी भी डराना नहीं चाहिए। माता-पिता बच्चों के मन में अपने प्रति विश्वास पैदा करें। बच्चों की रेस्पेक्ट भी करें तथा बच्चों को सभी का रेस्पेक्ट करना सिखाए। बच्चों को आशावादी बनाएं।

जप, तप स्वाध्याय की पंचम कार्यशाला का आयोजन

राजाजीनगर। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में तेरापंथ धर्म संघ के एकादशमाधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा इंगित प्रत्येक अमावस्या को आयोजित की जाने वाली जप, तप एवं स्वाध्याय की पंचम कार्यशाला का विशेष आयोजन तेयुप राजाजीनगर द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन राजाजीनगर में साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में किया गया।

साध्वीश्री जी ने 'ॐ हीं श्रीं महावीराय नमः' के जप से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। साध्वीश्रीजी ने भगवान महावीर द्वारा बाल्यावस्था में विवेक और ज्ञान द्वारा अहिंसा के मार्ग पर चलने के उदाहरणों के माध्यम से जनता को प्रेरित किया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी एवं सभा परिवार, महिला मंडल, प्रवक्ता उपासक महेंद्रकुमार दक, तेयुप से प्रबंध मंडल, कार्यकारिणी सदस्य एवं श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। मंच संचालन एवं आभार राजेश देरासरिया ने किया।

चुनाव शुद्धि अभियान

हावड़ा। अणुविभा द्वारा निर्देशित चुनाव शुद्धि अभियान के अंतर्गत मतदाता जागरूकता अभियान निरंतर गतिमान रखते हुए अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में हावड़ा के माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा मतदाता को जागरूक करते हुए उन्हें मतदान करने हेतु प्रेरित कर संकल्पित कराया गया।

अणुव्रत समिति हावड़ा की सहमंत्री लीना सिंघी ने अपने वक्तव्य में बताया की राष्ट्र निर्माण की भूमिका में ज्यादा से ज्यादा मतदान करना चाहिए। माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष ने इस अभियान की खूब प्रशंसा की एवम धन्यवाद ज्ञापित किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान

■ **सूरत।** बीकानेर निवासी सूरत प्रवासी राजकुमार जैन के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कराक विजयकांत खटेड़ एवं अरविंद बाफना ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग प्रत्याख्यान किए।

■ **हनुमंतनगर।** अनिल-नंदा एवं रौनक़-नेहा बाँठिया के नवीन प्रतिष्ठान किड्स औरा का शुभारंभ संस्कारक सज्जनराज कटारिया, राहुल मेहता व महावीर कटारिया ने पूरे विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से सम्पादित करवाया। इस अवसर पर तेयुप हनुमंतनगर उपाध्यक्ष महावीर कटारिया ने बाँठिया परिवार को शुभकामनाएं प्रेषित की।

नूतन गृह प्रवेश

■ **बेंगलुरु।** पुष्पा भेरू चोरड़िया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से आयोजित किया गया। तेयुप बेंगलुरु से संस्कारक आदित्य मांडोत ने निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

■ **रायपुर।** विकास बोथरा के नूतन गृह का गृह प्रवेश पूजन जैन संस्कार विधि से आयोजित किया गया। तेयुप रायपुर से संस्कारक अनिल दुगड़ व सूर्यप्रकाश बैद ने संपूर्ण विधि मंत्रोच्चार द्वारा पूजन संपन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **सरदारशहर।** सरदारशहर निवासी रतनलाल दुगड़ के सुपुत्र अंकित दुगड़ का शुभ विवाह सरदारशहर निवासी अरुणा देवी अग्रवाल की सुपुत्री कंकीका अग्रवाल के साथ विजय भवन, सरदारशहर में जैन संस्कार विधि से सानंद संपन्न हुआ। जैन संस्कारक भरत गोलछा, विनीत बोथरा एवं देवेन्द्र डागा ने विवाह संस्कार का मांगलिक आयोजन विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

■ **नालासोपारा, मुंबई।** तेरापंथ युवक परिषद नालासोपारा, मुंबई के अंतर्गत शांताबाई पन्नालाल मांडोत की सुपुत्री मीनाक्षी मांडोत एवं किशन हिरण के सुपुत्र राहुल हिरण का विवाह संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्काराक सौरभ जैन, पारस बापना, अरविंद धाकड़ ने संपूर्ण विधि विधान, मंगल मंत्रोच्चार, मंगलमय गीतिकाओं के संगान के साथ विवांता बैंक्वेट हॉल, नालासोपारा के प्रांगण में संपन्न करवाया।

■ **गंगाशहर।** गंगाशहर निवासी श्रीपाल कोचर के सुपुत्र पंकज कोचर का शुभ विवाह बीकानेर निवासी सेवाराम सोनगरा की सुपुत्री कमला सोनगरा के साथ जैन संस्कार विधि से सानंद संपन्न हुआ। संस्कारक रतनलाल छल्लाणी, विनीत बोथरा, देवेन्द्र डागा, रोहित बैद ने विवाह संस्कार का आयोजन विधि विधान पूर्वक तथा मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी अनेक विशेषताओं के पुंज हैं

महाश्रमणोस्तु मंगलम् कार्यक्रम का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशानुसार 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल, पूर्वांचल कोलकाता द्वारा उल्टाडांगा में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- चिदानंद योगी, अनुत्तर संयम के साधक आचार्यश्री महाश्रमणजी अनेक विशेषताओं के पुंज हैं। वे योगी, प्रवचनकार, कुशल शास्ता, साहित्यकार, सहज सरल विनम्र स्वभाव के धनी हैं, अध्यात्म के अलौकिक प्रकाश पुंज है।

मुनिश्री ने आगे कहा तेरापंथ धर्म संघ में आचार्य का स्थान सर्वोपरि होता है, आचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते हैं। वे संघ की सारणा - वारणा करने वाले होते हैं। प्रश्न खड़ा होता है आचार्य की अर्हता क्या है? संपदा क्या है? संपदा अर्थात् संपत्ति। ऐश्वर्य, आचार, श्रुत, शरीर, वचन, मति, प्रयोगधर्मा, संग्रह परिज्ञा इन गुणों से जो संपन्न होता है वह आचार्य बनने का अधिकारी होता है। आचार्यश्री महाश्रमणजी इन संपदाओं से युक्त है। आचार्य महाश्रमणजी अपनी साधना में अपने नियमों के प्रति सजग हैं। वे अपनी यात्रा आदि के ज़रिए मानवता की अपूर्व सेवा कर रहे हैं।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा आचार्यश्री महाश्रमणजी विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी हैं। मुनि कुणालकुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल पूर्वांचल की अध्यक्षा प्रेम सुराणा ने अभ्यर्थना करते हुए स्वागत वक्तव्य प्रदान किया। तेरापंथ कन्या मंडल एवं ते.म.मं. की बहनों ने महाश्रमण अष्टकम् का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने प्रेरणा गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन मंत्री बबीता तातेड़ ने व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। इससे पूर्व मुनिश्री के क्षेत्र में पदार्पण पर श्रीमती पूजा बच्छावत ने अपने विचार व्यक्त किये व उल्टा डांगा की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मंगलपाठ से पूर्व विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को तेरापंथ महिला मंडल पूर्वांचल द्वारा सम्मानित किया गया।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर विशेष

सभक्ति कृतज्ञता : निर्माण में लगे उस बलिदानी वक्त के प्रति

● साध्वी प्रसन्नयशा ●

निर्माण शब्द अपने आप में एक महत्वपूर्ण शब्द है। सबसे कठिन एवं उपयोगी कार्य है- किसी व्यक्ति के जीवन का निर्माण करना। तेरापंथ धर्मसंघ व्यक्तित्व निर्माण एवं सुसंस्कार संपादन की एक सुन्दर शिल्पशाला है। यहां शिखर पुरुष आचार्यों से लेकर प्रायः सभी चारित्रात्माएं अपने शिष्य संपदा एवं आने वाली नई पीढ़ी का बखूबी निर्माण करने में अपने श्रम, समय एवं शक्ति का नियोजन करते हैं। आचार्यों के निर्देशानुसार समणी एवं साध्वी समाज के निर्माण एवं विकास का मुख्य दायित्व यहां साध्वीप्रमुखाश्रीजी पर होता है। कोई भी साध्वीप्रमुखा इस पद पर प्रतिष्ठित होकर ही निर्माण का कार्य करते हैं, ऐसा नहीं है।

वर्तमान साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी को साध्वीप्रमुखा पद पर सुशोभित हुए दो वर्ष संपन्न हो रहे हैं। आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार संघ की हर एक साध्वी का जीवन निर्माण करना आज आपश्री का प्रमुख दायित्व बन गया है और आपश्री इस दायित्व को बखूबी वहन भी कर रहे है। पर आपश्री बहुत पहले से ही अनेकों के निर्माण में सचेष्ट रत रही हैं, इसकी मैं भी साक्षी रही हूं।

मैं आज से 34-35 वर्ष पूर्व पीछे देखूं तो आपश्री द्वारा मेरे ही जीवन निर्माण के कुछ प्रसंग साक्षात् हो जाते हैं, जो बड़े ही आह्लादकारी एवं कृतज्ञता से भरपूर नतमस्तक करने वाले हैं। श्रद्धेया साध्वी प्रमुखाश्रीजी के तृतीय चयन दिवस पर मैं उन प्रसंगों से एक का उल्लेख कर श्रद्धेया साध्वी प्रमुखाश्रीजी के पावन श्रीचरणों में अपनी पंक्ति समर्पित कर धन्यता का अनुभव कर रही हूं।

बात उस समय की है जब आपश्री न तो मुख्यनियोजिकाजी थे और न ही समणी नियोजिका। उस समय आपश्री अपने ग्रुप के लीडर थे और कुछ समय बाद पारमार्थिक शिक्षण संस्था के निर्देशिका पद पर। मैं मेरा महान सौभाग्य मानती हूं कि उस समय मुझे भी एक नवदीक्षित समणी के रूप में आपश्री के ग्रुप की एक सदस्या बनने का गोल्डन चांस प्राप्त हुआ। सन् 1989 में गणाधिपति पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी के महान् अनुग्रह से पा.शि.सं. के अन्तर्गत ब्राह्मी विद्यापीठ की शिक्षा प्राप्त करने से पहले ही मेरी समणी दीक्षा हो गई। उस समय ब्राह्मी विद्यापीठ के प्राक् स्नातक प्रथम वर्ष में मेरा प्रवेश मात्र ही हुआ था। जब मेरी दीक्षा हुई आपश्री विदेश यात्रा पर पधारी हुई थी। समणी नियोजिका जी एवं ग्रुप के रत्नाधिक समणी अक्षय प्रज्ञाजी ने चिंतनपूर्वक मुझे प्राक् स्नातक प्रथम वर्ष का कोर्स अस्खलित रूप से चालू रखने के लिए ब्राह्मी विद्या पीठ की रेगुलर स्टूडेंट बना दिया। मैं हमारे प्रवास स्थल अमृतायन से प्रतिदिन नियमित रूप से अध्ययन करने हेतु कॉलेज जाने लगी।

कुछ समय बाद जब आपश्री विदेश से लौटी, मेरे अध्ययन, कंठस्थ आदि के बारे में सारी जानकारी प्राप्त हुई। जब आपश्री को पता लगा कि मैं प्रतिदिन अध्ययन हेतु ब्राह्मी विद्यापीठ जाया करती हूं, आपको यह उचित नहीं लगा।

आपश्री का यह चिंतन था कि नवदीक्षित को सबसे पहले आचार, व्यवहार एवं संस्कार का समुचित प्रशिक्षण दिया जाए एवं उनके कंठस्थ ज्ञान पर ज्यादा ध्यान दिया जाए।

आपश्री मुझे रात्रि 2 बजे से 3 बजे तक 15-15 मिनिट के चार पीरियड देते। उसके बाद मैं पुनः निद्रा की गोद में चली जाती और आपश्री अपनी दिनचर्या-साधना में लीन हो जाते। एक सामान्य नवदीक्षित समणी के विकास एवं निर्माण के प्रति आपश्री का इतना उदार दृष्टिकोण, ऐसी धुन के स्मरण मात्र से मैं आह्लाद मिश्रित आश्चर्य में विस्फुरित सी हो जाती हूं। मैं मानती हूं श्रदेया साध्वीप्रमुखाश्रीजी के इस तृतीय दीक्षा दिवस पर आपश्री द्वारा पढ़ाया हुआ वह पाठ ही मुझे कुछ लिखने की प्रेरणा दे रहा है। मैं आपश्री के उस उपकार से उऋण हो सकूं, संभव ही नहीं है। बस इन टेढ़ी-मेढ़ी पंक्तियों को उकेरकर कृतज्ञता संपूरित भक्ति भाव ही समर्पित कर सकती हूं। मैं आपश्री के स्वस्थ तन-मन की हार्दिक मंगलकामना करती हूं। परमपूज्य गुरुदेवश्री के निर्देशन में आपश्री के सुदीर्घ सफल नेतृत्व की शुभकामना करती हूं।

हर आकार आपमें साकार

● साध्वी भास्कर प्रभा ●

प्रत्येक आकृति, अक्षर, ध्वनि और प्रत्येक वर्ण का अपना प्रभाव होता है। रहस्य जगत् में यंत्र, तंत्र, मंत्र का अलौकिक एवं अचिन्त्य प्रभाव देखने को मिलता है। यंत्र एक आकृति विशेष ही है, प्रत्येक आकार अपने भीतर रहस्यों को समेटे हुए हैं। हर आकृति अव्यक्त संदेश देती है। जब रेखागणित का अध्ययन करते हैं तब अनेक आकृतियां हमारे समक्ष आती हैं। उस हर आकार का साध्वी प्रमुखाश्रीजी में साकार रूप देखते हैं।

सबसे सरल एवं प्राथमिक आकार है- सरल रेखा (–)

दो छोर से बंधी यह आकृति ऋजुता का प्रतीक है। न कहीं टेढ़ापन, न झुकाव, न मुड़ाव। आपके जीवन में ऋजुता का साकार दर्शन होता है। जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव में आपकी मनःस्थितियों से अप्रभावित चेतना पूर्ण स्थिर बन रेखा सदृश हो जाती है।

रेखागणित की प्रसिद्ध आकृति है- त्रिभुज (△)

तीन रेखाएं जिसकी समान हो, न कोई बड़ी न कोई छोटी आपके जीवन की साधना को प्रतापी एवं प्रभावी बना रही है। त्रिभुज में कोई भी कोण ऊपर रहे, वही मुख्य प्रतीत होता है वैसे ही आप में भी ज्ञान भक्ति एवं कर्म योग उत्कृष्टता लिए प्रतीत होता है।

एक ऐसी आकृति जिसका न आदि है न अन्त, वो है वलयाकार (○)

यह एक ऐसा चक्र होता है जिसका ओर व छोर अज्ञात होता है, कहीं से भी खंडित व त्रुटित नहीं होता। आपकी नेतृत्व कुशलता, अनुशासननिष्ठा का चक्र अभेद्य, अछेद्य है। आपकी आन्तरिक उज्जवलता, आभामंडलीय ऊर्जा का एवं अमाप्य उत्साह के वलय का भी ओर-छोर नहीं है।

बहुआयामी कोण का धारक आकार है- सितारा (★)

स्टार आकार बहुआयामी व्यक्तित्व को दर्शाता है। उसके अनेक कोण सौंदर्य वर्धक होते हैं, वैसे ही आपकी करुणा, विनम्रता, उदारता, सहिष्णुता, गुणग्राहकता एवं समय प्रबंधन आदि आपके जीवन को स्टारमय बना रहे है। A.C., मशीन आदि पर लगे फाइव स्टार के चिन्ह उसकी उत्तम गुणवत्ता का प्रतीक है। यह मूल्यांकन का प्रतीक स्टार आपके जीवन में सतरंगी स्टार बन निखर रहा है।

रेखागणित का षट्कोण हो या दस कोण हो या सहस्र कोण, हर आकार आपमें साकार बन दृश्यमान होता है। आपकी सृजनशीलता, कर्त्तव्य निष्ठा, समय प्रबंधनता, अनुशासनशैली नए-नए आयाम प्रकट करने वाली है। गुणों के सहस्र कोणों से सुशोभित आपकी आदर्श शासना संघ की श्रीवृद्धि को सहस्रगुणित करती रहे।

दिल से सौ-सौ बार बधाऐं

● मुनि कमल कुमार ●

प्रमुखा जी के चयन दिवस पर दिल से सौ-सौ बार बधाऐं।
महाश्रमण की सूझ-बूझ को एक पलक भी न विसरायें।।

तुलसी महाप्रज्ञ करूणा से जागृत रहती बाह्याभ्यंतर,
शासन माता का संरक्षण वर्षों वर्षों मला निरंतर।
देश-विदेशों की यात्रा कर कितने-कितने अनुभव पाये।।

जहां पधारी वहां आपने भैक्षवगण की शान बढ़ाई,
हिन्दी संस्कृत प्राकृत इंग्लिश सबमें पारंगत कहलाई। भाषण
लेखन कला मनोहर श्रोता पाठक सब गुण गाये।।

विश्रुतविभा नाम आपका शत प्रतिशत सार्थक बन पाया, क्षमा
सहिष्णुता के कारण ही अजब गजब व्यक्तित्व बनाया।
तपी तपाई सजी धजी साध्वीप्रमुखा पा भाग्य सरायें।।

चंदेरी ने तीन-तीन दी क्रमशः ख्यात नाम प्रमुखायें, कितनी
भाग्यशालिनी धरती भिक्षु गरु ने चरण टिकाये। तेरापंथ धर्म
संघ की राजधानी सबके मन भाये।।

मंगलमय घडियां आई

● साध्वी त्रिशला कुमारी ●

ओ आयो गण-प्रांगण में उत्सव, मंगलमय घडियां आई।
ओ आयो चयन दिवस शुभ अवसर, कण-कण में खुशियां छाई।।

तुलसी महाप्रज्ञ की कृति, गुरुवर मोल बढ़ायो सा।
देकर प्रमुखापद गौरवमय, थांरो विरूद बढ़ायो सा।।

विनय समर्पण सहज सरलता, गुरुनिष्ठा बेजोड़ सा।
अद्भुत अनुपम कार्य कुशलता, तप में रुचि विशेष सा।।

वर्धापन की मंगल बेला, शुभ संकल्प सझावां सा।
नूतन रंग भरां सपना में, गण कीरत फैलावां सा।।

करां कामना रहो निरामय, संजम साथ दिरावो सा।
साध्वी परिकर बढ़े प्रगति पथ, शक्तिपात करावो सा।।

लय : ओ बन्नी थांरो चांद

आया आया, चयन दिन आया

● साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभा ●

आया आया, चयन दिन आया, भक्ति का रंग छाया
महके मन मंदार है। आज शासन में खुशियों की बहार है,
भैक्षव शासन में खुशियां अपार है।।

निज दीक्षा दिन आर्यप्रवर ने, नवम स्थान सम्मान दिया,
चंदेरी की दिव्य मणि को श्रमणी गण सिरमोर किया,
परम पूज्यश्री आचार्यों की कृपा मिली है भारी,
महकी क्यारी, खिली है फूलवारी, जीवन गुलजार है।।

विद्या विनय त्रिवेणी, गणनिधि वृद्धि में तत्पर,
लेखन, प्रवचन संपादन में समय नियोजन है सुखकर,
अप्रमाद की तुम नजीर हो, पल-पल लाभ कमाना,
मन में ठाना, कहीं न रुक जाना, शक्ति का आधार है।।

दीक्षा कल्याण महोत्सव प्रभु का सोने में सुगंध है।
मनोनयन का पर्व मनोहर छाया नव आनंद है,
वर्धापन कर मोद मनाएं, आगे बढ़ते जाएं,
मंगल गाएं, चरणों में शीश झुकाएं, भावों का उपहार है।।

लय - फिरकी वाले

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

आचार्य महाश्रमण की सन्निधि में मेरी अनुभूतियां

● समणी जिज्ञासाप्रज्ञा ●

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊंचा माना गया है। प्रसिद्ध वैदिक शास्त्र कुलार्णवतन्त्र में गुरु के 6 रूप बताए गए हैं–

प्रेरकः सूचकश्चैव, वाचको देशिकस्तथा।
शिक्षको बोधकश्चैव, षडैते गुरवः स्मृताः।।

वास्तव में महान गुरु अपने शिष्य-शिष्याओं के लिए अनेक रूपों में उपकारक बनते हैं। वे अपनी दृष्टि से शब्दों से और अपने जीवन से शिष्यों को विशुद्धि, बोधि और समाधि प्रदान करते हैं। उनकी सन्निधि में जीए गए पल और उनके पवित्र शब्द जीवन की अनमोल विरासत बन जाते हैं। हम सौभाग्यशाली है कि परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महान गुरु का पावन सान्निध्य हमारा जीवन-पथ प्रकाशित कर रहा है। वैसे तो चतुर्विध धर्मसंघ के अनेक सदस्यों के आचार्यप्रवर से जुड़े अपने-अपने अनुभव हैं। मैं यहां अपने जीवन से सम्बन्धित तीन प्रसंगों का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगी। जब-जब मुझे इन प्रसंगों की स्मृति होती है, मेरा मन आनंद सागर में निम्मजित हो जाता है।

कयामत का दिन : बना किस्मत का दिन

यह प्रसंग 1/7/2015 गुरुवार इटहरी (नेपाल) का है। गुरु-सन्निधि में कयामत के दिन की चर्चा चल रही थी। उस समय इस प्रकार की महाविनाशकारी अफवाह भी चल रही थी कि अमुक दिन कयामत का दिन होगा। उस समय साधु-साध्वी एवं कुछ समणीजी उपस्थित थे। गुरुदेव ने महाश्रमणीजी से पूछा– 'कल कयामत का दिन है क्या'? गुरुदेव ने फरमाया– 'कल शुक्रवार है, अफवाह है कि यह कयामत का दिन हैं।' गुरुदेव ने कुमारश्रमणजी को कहा– जाओ। तुम इस सम्बन्ध में जानकारी करके आओ। कुछ समय पश्चात् उन्होंने कहा–नहीं, ऐसा तो कुछ नहीं है। कल का दिन कयामत का दिन नहीं है। अनिष्ट की संभावना को टालने के लिए आचार्यप्रवर ने सोचा–तपस्या का अनुष्ठान कर लेना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा-संतों में हमारे मुनि दिनेशजी उपवास कर लेंगे, साध्वी में सुमतिप्रभा कर लेगी, समणी में समणी जिज्ञासाप्रज्ञा कर लेगी, गुरुदेव ने मुझे पूछा– 'तुम्हें कोई दिक्कत तो नहीं है?' गुरुमुख से उपवास के लिए मेरा नाम सुनकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मैंने कहा– नहीं गुरुदेव! मुनि दिनेशकुमारजी से कहा– कल एक श्रावक और एक श्राविका को भी उपवास के लिए तैयार करना है। उन्होंने कहा– आचार्यवर के निर्देश के अनुसार श्रावक और श्राविका को मैं तैयार कर लूंगा। मुझे ऐसा लगा– गुरुदेव की अंतर दृष्टि जागृत थी, अतः विघ्न निवारण के लिए सबको उपवास हेतु प्रेरित किया। उस दिन मुझे ऐसा लगा कि कयामत तो पता नहीं कब आएगी, लेकिन मेरे लिए वह दिन किस्मत का दिन बन गया।

मूल्यांकन शिष्य का

सन् 2023 में संघीय अपेक्षा से आदरणीय समणी मधुरप्रज्ञाजी और मुझे ह्युस्टन (अमेरिका) केन्द्र में भेजा गया। वहां से लौटकर हमने 6 फरवरी 2024 को परमाराध्य गुरुदेव के दर्शन किए। विदेश से आने वाले सभी समणीजी की पृच्छा हुई। आचार्यप्रवर की प्रसन्न दृष्टि से हमारा मन आह्लादित था। पृच्छा सम्पन्न होने पर मैंने आचार्यवर को निवेदन किया- ''श्रीचरणों में कु ''गुरुदेव! विदेश का भी इतिहास सुरक्षित होना चाहिए, क्योंकि प्रारम्भ के समणीजी ने बहुत सहन करके केन्द्रों की स्थापना की है। यदि अभी लिखित नहीं होगा तो विस्मृति के गर्त में चला जाएगा।'' वहां साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्याजी आदि साध्वीवृंद एवं समणीजी भी उपस्थित थे। गुरुदेव ने साध्वीप्रमुखाजी से पूछा, साध्वीप्रमुखाजी ने भी सहमति प्रकट की। गुरुदेव ने पूछा–''कौन समणीजी इतिहास लिख सकती है?'' समणी मधुरप्रज्ञाजी से पूछा–'क्या तुम लिख सकती हो?' उन्होंने कहा–'गुरुदेव की कृपा होगी तो हो जाएगा।' पुनः गुरुदेव ने पूछा-'क्या तुमको सहयोगी के रूप में कोई चाहिए?' उन्होंने कहा–'समणी सन्मतिप्रज्ञाजी।' पास में मुख्यमुनिप्रवर विराजे हुए थे। गुरुदेव ने लिखित करवाया और साध्वीवर्यांजी को कहा-'याद रखना 2 वर्ष में कार्य सम्पन्न हो जाए तो मधुरप्रज्ञा को उपहार देना है।'

मैंने अनुभव किया कि गुरुदेव संघ के छोटे-से-छोटे सदस्य की बात पर भी पूरा ध्यान देते हैं एवं यथा अपेक्षा मूल्यांकन भी करते हैं। हम सब धन्य है कि इस कलियुग में हमें ऐसे महान पराक्रमी और यशस्वी गुरु प्राप्त हुए हैं। उनकी छत्रछाया में हम उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास करें, यह अपेक्षा है।

मंगल पाठ की कहानी : मेरी नादानी

प्रसंग दिल्ली का है। मैं और समणी अर्हत्प्रज्ञाजी औरंगाबाद से दिल्ली गुरु-सन्निधि में जाने लगे तो शासनश्री साध्वी चंदनबालाजी ने कहा-'आज कल मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। रात में नींद नहीं आती है। अभी मुझे संघ की सेवा करनी है। अतः आप मेरी तरफ से गुरुदेव को मंगलपाठ सुनाने का निवेदन कर देना। गुरु सन्निधि में पहुंचते ही मैंने मंगलपाठ के लिए निवेदन किया तो गुरुदेव ने फरमाया-लो तुम्हें ही मंगलपाठ सुना देते हैं।' मैंने निवेदन किया– 'आप साध्वीवर्याजी को सुना देना।'

गुरुदेव मेरी बात सुनकर मुस्कराने लगे। जब मैंने समणियों, साध्वियों और साध्वीवर्याजी को यह बात बताई तो उन्होंने कहा– भोली हो, गुरुदेव ने कृपा कराई तो सुन लेते। मंगलपाठ, बाद में जब साध्वीवर्याजी ने साध्वीश्री चंदनबालाजी के लिए मंगलपाठ का निवेदन किया तो आचार्यवर ने कहा-हमने तो उसी दिन समणी जिज्ञासाप्रज्ञाजी को मंगलपाठ सुनने के लिए कहा ही था। साध्वीवर्याजी ने कहा-'गुरुदेव! जिज्ञासाप्रज्ञाजी को ऐसा ध्यान में था कि किसी के लिए मंगलपाठ सुनना हो तो मुख्यमुनिप्रवर एवं साध्वीवर्याजी ही सुन सकते हैं। मेरी यह बात सुनकर वहां उपस्थित सभी साध्वीजी मुस्कराने लगीं। इस घटना को मैं जीवन भर नहीं भूल पाऊंगी, क्योंकि गुरु ने स्वयं मंगलपाठ सुनाने को कहा, पर मैं अपनी नादानी के कारण उससे वंचित रह गयी।

इस तरह गुरु-सन्निधि के क्षण विविधता लिए होते हैं, कभी प्रेरणा पाथेय के निमित्त बनते हैं, वे कभी आनंद के साथ स्मृति में स्थायी बन जाते हैं, कभी जागरूकता के साथ नया प्रशिक्षण देते हैं। हम उन प्रसंगों से अपने जीवन-उपवन को सजाते रहें। ऐसे महान गुरु चिरकाल तक धर्मसंघ का योगक्षेम करते रहे, इसी शुभकामना के साथ।

पृष्ठ 15 का शेष

साध्वीप्रमुखाश्री...

विहार के समय जो टाइम लगना है, उसका ध्यान के रूप में प्रयोग करलो, सिर्फ नीचे देखें, इधर-उधर न देखें। आहार करते समय भी ध्यान का आंशिक प्रयोग किया जा सकता है। प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष आने वाला है। उस वर्ष के दौरान चतुर्मास में भी मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में ध्यान का प्रयोग कराएं ऐसा चिंतन किया है।

साध्वीप्रमुखाश्री– गुरुदेव! आपने मुनि सुमेरमलजी स्वामी से दीक्षा ली और उसके बाद मुनिश्री ने आपको गुरुदेव के चरणों में समर्पित कर दिया। उसके बाद कभी आप गुरुकुलवास में रहे, कभी आप बहिर्विहार में रहे। मेरे मन में यह जिज्ञासा है कि यह व्यवस्था गुरुदेव श्री तुलसी आपको देते थे अथवा कभी आपने कोई इच्छा भी जाहिर की कि मैं बहिर्विहार में जाना चाहता हूं या गुरुकुलवास में रहना चाहता हूं?

आचार्यप्रवर – संभवतः मेरा एक सिद्धांत दिमाग में रहा कि गुरु जहां रखे वहां रहना। गुरु जो फरमा दे, राज में रखें या न्यारा में भेजें, हम तैयार हैं। किसके साथ भेजें? जहां आपकी मर्जी हो उनके साथ भेजो। मेरी कोई इच्छा नहीं कि कहां रहना, जहां गुरु रखे वहां रहना। अपना कोई आग्रह नहीं। मैने कुछ भी निवेदन नहीं किया। गुरु ने स्वयं फरमाया कि अब तुम यहां रहो। मेरा एक तरह से समर्पण का भाव रहता, आग्रह तो दूर अर्ज भी प्रायः नहीं करता।

साध्वीप्रमुखाश्री– भन्ते! कभी आप जीवन के संस्मरण सुनाते हैं। कई संस्मरण ऐसे हैं कि आचार्य श्री तुलसी के साथ हुए। आचार्यश्री वहां कहते थे - मुनि मुदित आओ तब अपनी डायरी साथ लेकर आया करो। गुरुदेव तुलसी का आप पर बहुत अनुग्रह रहा। मेरी आपसे जिज्ञासा है कि आप पर इस अनुग्रह का राज क्या है?

आचार्यप्रवर– गुरुदेव तुलसी का शुरू से ही मुझ पर अनुग्रह था। कुछ तो अपना भाग्य होता है, कहीं पूर्व जन्म के आपस के संस्कार होते हैं। आचार्य श्री तुलसी एक चिन्तनशील, कुछ भविष्य दृष्टा, संघ की दृष्टि से भविष्य का चिन्तन रखने वाले थे। कईयों पर उन्होंने ध्यान दिया होगा, उनके मन में मुदित पर भी ध्यान गया कि ये बच्चा भी आगे संघ का काम संभाल सकता है। कुछ मेरा व्यवहार और देखकर उनको लगा हो कि टाबर अच्छा है। वो मेरे लिए समय लगाते, पश्चिम रात्रि में पता नहीं कितने घंटे उनके जीवन के मुझे सान्निध्य मिला। कितने ग्रंथों का उनके चरणों में बैठकर मैं पाठ करता, वे गलती सुधारते, अर्थ बताते। कभी व्यक्तिगत बातचीत मैं कर लेता। जब छोटा बच्चा था तो उलाहना डांट भी करते थे, थोड़ा बड़ा होने पर स्नेह, वात्सल्य, थोड़ा सम्मान देना शुरू कर दिया। मेरा उपयोग कर संघीय काम में जोड़ने लगे, मीटिंग में बुलाते। मुझे काम करने का बहुत अवकाश दिया। अंतर्मन से मानों आगे पंहुचाने, संघ के शिखर तक पहुंचाने की दृष्टि से उन्होंने ध्यान दिया, चिन्तन किया। बचपन से ही गुरुदेव तुलसी का मुझ पर कृपा भाव था। कुछ मेरा पुण्य-भाग्य मानलो, उनका भविष्य का चिंतन मानलो, उनकी पारखी नजर मानलो, सब मिलकर हुआ।

साध्वीप्रमुखाश्री– भन्ते! आपने गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के साथ यात्राएं की। आपश्री ने परम पूज्य महाप्रज्ञजी के साथ में यात्राऐं की। आचार्य बनने के बाद स्वतंत्र रूप में अहिंसा यात्रा की। अहिंसा यात्रा से लोगों को लाभ भी हुआ। मेरी जिज्ञासा है कि आपकी इस बारे में क्या अनुभूति रही?

आचार्यप्रवर– यात्रा करने में सात वेदनीय का भी योग चाहिये। शारीरिक अनुकूलता चाहिये तो व्यवस्था की भी अनुकूलता चाहिये, भाग्य की भी अनुकूलता हो तब यात्राऐं हो सकती है। यात्रा करने में लाभ है, बाकी तो समय-समय की बात है। उम्र की, स्वास्थ्य की अनुकूलता हो तब तक यात्रा कर लेनी चाहिए। यात्रा करने से हमारे श्रावक समाज की संभाल अच्छी हो जाती है। एक बार आने से समाज में नया उन्मेष आ सकता है। अनुकूलता हो तो यात्राएं करनी भी चाहिये, खासकर जो मुखिया हैं उन्हें यात्रा करनी चाहिए। यात्रा से जनोपकार भी हो सकता है।

साध्वीवर्याश्री....

फिर भी हम सभी के लिए बात है कि ये संन्यास है, साधु की अवस्था है इसमें भावों की जितनी शुद्धि रहे और प्रतिक्रमण अच्छे ढंग से करें। प्रतिक्रमण ध्यान से, सावधानी से करें। प्रतिक्रमण का पाठ पूरा कंठस्थ है या नहीं। प्रतिक्रमण को अच्छा करने से संन्यास को तेजस्वी बनाने में सहायता मिल सकती है। दूसरी बात है गलती हो जाये तो प्रायश्चित लेने का क्रम रहे। प्रायश्चित लेने से दोषों की शुद्धि की भावना होती है। रजें जो आती हैं प्रायश्चित से वे दूर हो जायेगी। दोष-प्रमाद के बादल दूर हो जाए तो संन्यास की तेजस्विता उजागर हो सकती है।

संवाद भगवान से...

आचार्य प्रवर के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर चरित्रात्माओं द्वारा अलग अलग रूपों में आचार्यश्री की अभ्यर्थना की गई। स्वयं आचार्य प्रवर के साथ संवाद की नई विधा के माध्यम से साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी, मुख्यमुनि महावीरकुमारजी एवं साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी ने अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए, जो जन-जन की आस्था को पुष्ट करने वाले एवं प्रेरणा देने वाले थे। प्रस्तुत है आचार्य श्री महाश्रमण जी के साथ धर्मसंघ के पदस्थ चारित्रात्माओं का संवाद - संवाद भगवान से :

साध्वीप्रमुखाश्री

साध्वीप्रमुखाश्री- आपने जब दीक्षा ली, आप लगभग बारह वर्ष के थे। दीक्षा से पूर्व मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी ने आपको कहा था- मोहन! अब निर्णय करो कि तुम्हें कौनसे मार्ग पर जाना है? त्याग के मार्ग पर जाना है या भोग के मार्ग पर जाना है? आपने उस समय अपने जीवन के प्रॉफिट और लॉस के बारे में चिंतन किया कि मैं किस रास्ते पर जाऊं जिससे मुझे प्रॉफिट होगा, किस रास्ते पर मेरा लॉस न हो। यह विवेक शक्ति आप में कैसे जागृत हुई?

आचार्यप्रवर- सोचने की शक्ति के बारे में जो जिज्ञासा प्रस्तुत की है, थोड़ा तो मेरे लिए भी आश्चर्य का विषय है कि मैं बारह वर्ष का भी उस समय नहीं था। तो भी मैंने एक सिस्टेमेटिक ढंग से चिन्तन किया, क्या लाभ क्या हानि? मैंने कालूगणी की माला पहले फेर ली थी, कालूगणी की कृपा से हो सकता है ऐसा चिंतन हुआ। कालूगणी की तिथि, छठ का दिन, उनका माला जप, फिर चिंतन में बैठा। साधु बनूं तो क्यों बनूं, नहीं बनूं तो क्यों नहीं बनूं। इन सारे बिंदुओं का चिंतन किया तब मुझे लगा कि साधु बनना ही ज्यादा श्रेयस्कर है। इतनी चिंतन की क्षमता कैसे जागी? यह क्षयोपशम तो हो ही सकता है, बाकी कोई दिव्य सहयोग मिला हो तो केवली जानें। कुछ भी हो, मैं सोचता हूं मैंने चिंतन बहुत बढ़िया किया और निर्णय भी कर लिया और इतना बड़ा मेरा सौभाग्य था कि यह महान पथ मुझे प्राप्त हो गया।

साध्वीप्रमुखाश्री- आचार्यवर मैंने आपको मुनि अवस्था में देखा है। गुरुदेव श्री तुलसी के सान्निध्य में जब बड़े-बड़े कार्यक्रम होते थे। कभी पट्टोत्सव मनाया जाता, कभी जन्मोत्सव मनाया जाता और उस समय आप कार्यक्रम में पधारते, गुरुदेव के पट्ट के पीछे बैठ जाते थे। वज्रासन मुद्रा, आंखे बन्द और लम्बे समय तक आप ध्यान करते रहते थे। मेरे मन में यह जिज्ञासा है आचार्यवर! आपने उस समय में इतना ध्यान किया था, क्या आपको अनुभव होता है कि हमारे साधु-साध्वियों को ध्यान का प्रयोग करना चाहिये, जिनसे उनका व्यक्तित्व तेजस्वी बन सके?

आचार्यप्रवर- दीक्षा लेने के बाद प्रारंभ के वर्षों में भी मैं ध्यान का प्रयोग करता था। प्रवचन के समय या रात्रि में प्रतिक्रमण के बाद ध्यान का प्रयोग किया करता था। मेरी ध्यान में अच्छी निष्ठा थी। उस वक्त समय निकालना भी आसान होता था। संभावित लगता है कि मेरे पिछले जन्मों में साधना की हुई थी वो संस्कार जागे थे। ध्यान अच्छा है, आगम स्वाध्याय को भी मैं महत्व देता हूं। ध्यान एक ऐसी चीज है, जिसे हम अनेक कार्यों के साथ जोड़ सकते हैं। ऐसे ही बैठे हैं तो थोड़ी चंचलता को कम कर दो, ध्यान का कुछ प्रयोग कर लो। (शेष पेज 14 पर)

मुख्यमुनिश्री

मुख्यमुनिश्री- गुरुदेव आपकी साधनाकाल के ये पचास वर्ष। इसमें आपने अनेक विशेष अनुभूतियां की हैं। हम जानना चाहते हैं कि इन पचास वर्षों में पूज्य गुरुदेव की विशेष अनुभूतियां क्या रही हैं?

आचार्यप्रवर - आज के दिन दीक्षा हुई थी, मुनि श्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' से दीक्षा प्राप्त हुई थी। पचास वर्षों के बाद आज का दिन आया है। इन पचास वर्षों में कुछ साधना के प्रयोग भी किये, ध्यान-साधना में भी समय लगाया। इसके साथ अध्ययन, सीखना, स्वाध्याय इसमें भी रूचि रही। कंठस्थ करना, चितारना, सीखना ऐसे काम चलते रहे। गुरुदेव तुलसी के पास रहने का अच्छा मौका मिला। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के तो और ज्यादा, युवाचार्य के रूप में भी, पास रहने का मौका मिला। गुरुओं का सान्निध्य मिला और भी रत्नाधिक संतो के पास रहने का मौका मिला और प्रेरणा मिली। फिर कुछ क्षयोपशम होता होगा, अपने भीतर में यह करना, यह संकल्प करना, इस रूप में चलना, पढ़ना और कहीं निष्पृहता का भाव और जैसा मैंने कहा छद्मस्थ हैं तो गलतियां प्रमाद, कषाय का भाव ये तो संभव हैं। फिर भी वो वैराग्य का चिराग, वैराग्य की चिनगारियां इतनी प्रज्जवलित होती रही, हुई है। किसी संत को देखा कि ये ऐसे हैं, मैं भी इस बात पर ध्यान दूं। मैं भी इस बात को ग्रहण करूं, यों अनेक संतों के पास रहने का, सीखने का, बड़े संतों का संरक्षण मिला, प्रेरणा मिली। किसी संत ने कहा कि कोयला खायेगा उसका मुंह काला होगा, जहर पीयेगा वो मरेगा, जो गलतियां करेगा वो काला होगा। दूसरे गलतियां करें तो करें, हमें गलतियां नहीं करनी, ऐसी अनेक प्रेरणाएं मिलती रही। मुझे भी पचास वर्षों में कईयों से प्रेरणा प्राप्त करने का, फिर आगम आदि ग्रंथ स्वाध्याय से तो कुल मिलाकर कुछ-कुछ संकल्प की चेतना जागी। इस बात पर अडिग रहना, इस रास्ते पर चलना, इस तरह के संकल्प जागे। इस तरह पचास वर्ष सम्पन्न हो गये हैं और भी आगे संयम जितना निर्मल रह सके वह मेरी कामना है।

मुख्यमुनिश्री- भंते ! बचपन में आप खेलते कूदते थे, तब आपकी मां कहती कि तुम मेरे साथ चलो, इधर मत रहो। वे संतों के ठिकाने ले जाती। कई बच्चे बोलते हैं वहां जाने से बोरियत महसूस होती है, जब प्रथम बार आपकी मातुश्री आपको संतों के ठिकाने लेकर गयी तो वहां जाकर आपको बोरियत महसूस नहीं हुयी क्या? आपकी संतों के प्रति इतनी रूचि कैसे जागृत हो गयी कि बिना वैरागी आपने इतने-इतने थोकड़े कंठस्थ कर लिए, यह सब कैसे संभव हुआ?

आचार्यप्रवर - जहां तक मेरी स्मृति है, हम बच्चे थे, घर में थोड़ा लड़ाई-झगड़ा हो जाता तो मेरी संसारपक्षीय मां जो महाराज के ठिकाने जाया करती वो कहती तुम मेरे साथ चला करो। (शेष पेज 5 पर)

साध्वीवर्याश्री

साध्वीवर्याश्री- पूज्यवर! जिस श्रद्धा और उत्साह के साथ आपश्री ने अभिनिष्क्रमण किया था, संयम के प्रति वही श्रद्धा और उत्साह निरंतर वर्धमान है, इसका क्या राज है?

आचार्यप्रवर- वर्धमान तो ऐसा है, इसमें मोहनीय कर्म का क्षयोपशम जितना सुदृढ़ होता है उस हिसाब से वह भाव पुष्ट रह सकता है और यह बहुत सौभाग्य की बात है कि पचास वर्ष आज सम्पन्न हुए हैं, हो रहे हैं। आत्मा छदमस्थ है, प्रमाद, दोष, गलतियां, ये तो संभव है पर मूल जो संयम के प्रति निष्ठा जो जितनी मात्रा में प्राप्त है, वो मोहनीय कर्म का क्षयोपशम है। हो सकता है पिछले जन्मों में कुछ साधना-तपस्या की हुई है उस साधना-तपस्या से संस्कार मजबूत हो गया। ये काफी संभव है कि पिछले जन्मों में साधना-तपस्या के जो संस्कार थे उनको उजागर होने का इस जन्म में फिर मौका मिला। ऐसी संभावना की जा सकती है।

साध्वीवर्याश्री- आप स्कूल जाते थे, उस समय आपको मोनीटर बनाया गया था। आपके मोनीटर के रूप में क्या दायित्व थे?

आचार्यप्रवर - स्कूल में मुझे मोनीटर के रूप में काम करने का मौका मिला। संभवतः मेरा अनुभव है कि मोनीटर बनने से पढ़ाई में थोड़ी कमी आ जाती है। मोनीटर रूप में सेवा देना अच्छा है। मोनीटर को थोड़ा अपना संयम भी रखना चाहिये। दूसरों की गलतियों को मास्टर जी को बता दे। मोनीटर एक अनुशासन का, बच्चों का ध्यान रखने का काम है। खुद का मोनीटर आदमी खुद बन जाये वह एक अच्छी बात है।

साध्वीवर्याजी- भंते! आचार्य काल से पूर्व प्रत्येक महीने की एक तारीख को आचार्य प्रवर साधना के प्रयोग करवाते थे। वे साधना के क्या प्रयोग थे? उनमें आचार्य प्रवर को क्या अनुभूति हुई?

आचार्यप्रवर - यह एक तारीख का प्रयोग मैंने थोड़ा बाद में शुरू किया, महाश्रमण अवस्था के बाद मैंने शुरू किया। गुरुदेव श्री तुलसी को मैंने निवेदन किया कि मैं एक तारीख को उपवास करना चाहता हूं। उपवास में मौन, ध्यान और एकांत। कई वर्षों तक यह क्रम चला होगा। साधना में चिन्तन करता कि यह काम करना कि नहीं करना, डायरी में नोट कर लेता। यह सिद्धांत, यह नियम, ऐसे करना, कभी एकांत में छत के ऊपर जाकर बैठ जाता। बाद में फिर अमावस्या का क्रम शुरु हो गया। ज्यों-ज्यों कार्य क्षेत्र बढ़ता गया एकांत वाला काम कम हो गया, कुछ विचार भी बदल गया होगा।

साध्वीवर्याश्री- भन्ते! आज आपको तेजस्वी संन्यास के पचास वर्ष सम्पन्न हो गये। हम हमारे संन्यास की तेजस्विता कैसे बढ़ा सकते हैं, आप कृपा कराएं।

आचार्यप्रवर- संन्यास मेरा कितना तेजस्वी है, आपका कितना तेजस्वी है, माप दंड तो करना थोड़ा कठिन काम है। (शेष पेज 14 पर)

ज्ञान का खजाना भरने का होता रहे प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

ठाकरखेड़ भागिले।
25 मई, 2024

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्व है। सम्यक् ज्ञान का अति महत्व है। एक शब्द है ज्ञान और दूसरा है चारित्र। ज्ञान के अभाव में व्यक्ति अनजाने में गलतियां कर लेता है। ज्ञान एक प्रकार से प्रकाश है और अज्ञान अंधकार है। अज्ञान एक कष्ट है। गुस्सा-अंहकार आदि पाप है। इनसे भी बड़ा पापों का विषय अज्ञान है क्योंकि अज्ञान के आवरण के कारण आदमी अपने हित और अहित का बोध नहीं कर पाता है। इसलिए हमें जीवन में सम्यक् ज्ञान के विकास का प्रयास करना चाहिए। नौ तत्वों को अच्छी तरह जान लेने से व्यक्ति चारित्र की दिशा में अच्छी गति कर सकता है।

पूज्यप्रवर ने फ़रमाया कि खुद का ज्ञान खुद के काम आता है। दूसरों के

भरोसे नहीं रहना चाहिए। आपदा-विपदा कभी भी हो सकती है, ज्ञान एक प्रकार की तलवार है, अग्नि है। अग्नि से अंधकार को दूर किया जा सकता है, ज्ञानरूपी तलवार से अज्ञान रूपी अंधेरे को छेदा जा सकता है। हमारे जीवन ने सम्यक् ज्ञान का विकास होना चाहिए। हम ज्ञान का खजाना भरते रहें ऐसा प्रयास होता रहे।

गुरुदेव तुलसी छोटे संतो को फरमाते थे कि तुम लोग तत्वज्ञान का विकास करो। स्वाध्याय से ज्ञान का विकास हो सकता है। कर्म निर्जरा के साथ अच्छा प्रकाश प्राप्त हो सकता है। प्रज्ञा-चेतना निर्मल हो जाए तो अच्छी-अच्छी बातें पकड़ में आ सकती है। पुराने समय में साधन सीमित थे, आज तो ज्ञान प्राप्ति के अनेकों साधन उपलब्ध हैं। अनेक ग्रन्थों से सद्ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

ज्ञान के साथ चारित्र होना भी अच्छा है। शिक्षण संस्थान ज्ञान प्रदान करते हैं। ज्ञान के साथ बच्चों में अच्छें संस्कार भी आए, ऐसा प्रयास होता रहे तो बच्चों का अच्छा विकास हो सकता है। हम सम्यक् ज्ञान और तत्व बोध का सम्यक् प्रयास करें यह काम्य है।

जिला परिषद विद्यालय के सुभाष बायार ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की। देउलगांव मही की तेरापंथ कन्या मंडल तथा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

अर्हम्
"शासनश्री" मुनि हर्षलाल जी स्वामी का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म :	भाद्रपद कृष्णा तृतीया वि.सं. 1991 गाँव - लाछुड़ा (राज.)
माता :	हंसादेवी चौरड़िया
पिता :	घीसुलाल जी चौरड़िया
दीक्षा :	माघ शुक्ला सप्तमी वि.सं. 2002 सरदार शहर (राज.)
अग्रगण्यः	माघ शुक्ला तृतीया, वि.सं. 2045 छापर (राज.) आचार्य श्री तुलसी द्वारा
शासनश्री संबोधन :	11 जून 2012, पचपदरा, आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा
सुक्ष्मलिपिकारः	मुनिश्री द्वारा सूक्ष्म अक्षरों में एक पृष्ठ में लिपिबद्ध भगवत गीता, उत्तराध्ययन सूत्र, दशवेआलियं, भक्तामर स्तोत्र, इत्यादि ...
देवलोकगमन :	ज्येष्ठ कृष्णा तृतीया वि. स. 2081, कनाना (राजस्थान)

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

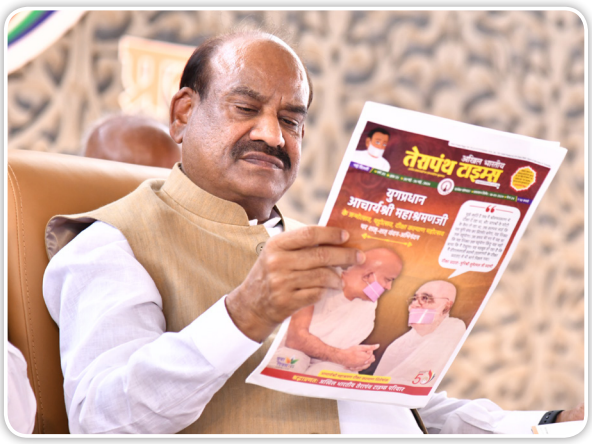

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**